ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

सितम्बर 2016

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

आत्मशुद्धि आश्रम के संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

आश्रम के 50वें स्थापना दिवस पर आप सादर आमन्त्रित हैं।

(विवरण कवर पृष्ठ 3 पर)

आर्य समाज के
संस्थापक,
वेदों के उद्धारक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम
संस्थापक कर्मयोगी
पूज्य श्री आत्मस्वामी
जी महाराज

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

928

श्री बाबु राम जी गोयल
अनाज मंडी, बहादुरगढ़

929

श्री अनुप कुमार जी
चौहान सत्य निकेतन, दिल्ली

930

श्री संग्राम सिंह जी
हर्ष विहार, प्रीतमपुरा, दिल्ली

931 **श्री देवेन्द्र जी**
खैरा चौक, नजफगढ़, दिल्ली

932 **श्री संजय गुप्ता**
ड्रिनिटीटावर, गुड़गांव

प्रिय बन्धुओं! मास सितम्बर में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी अक्टूबर अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

– व्यवस्थापक

धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय से लाभ उठाएं

वेणु नेत्र संस्थान दिल्ली के सहयोग से आत्मशुद्धि आश्रम में चल रहे धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय में पधार कर आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित सुयोग्य डाक्टरों द्वारा नेत्र जांच करवाएं। आप्रेशन भी फ्री किए जाते हैं। ओ.पी.डी. प्रतिदिन प्रातः 9 बजे से सायं 5 बजे तक खुली रहती है। रविवार को छुट्टी रहती है।

– व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

भाद्रपद-आश्विन सम्वत् 2073 सितम्बर 2016

सृष्टि सं. 1972949117 दयानन्दाब्द 193

वर्ष-15) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-9

(वर्ष 46 अंक 9)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

मो. 9416054195, 9728236507

❖

सह सम्पादकः

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)

❖

परामर्श दाताः गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(8529075021)

❖

उपकार्यालय

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

व्यवस्थापकः चन्द्रभान चौधरी

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ .

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
आश्रम समाचार	4
जंगम स्थावर का राजा	6
संस्थाओं और वार्षिकोत्सवों का महत्व	7
पुरुषार्थ चतुष्टय	9
स्वाध्याय	12
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जीवन चरित्र	15
योगेश्वर कृष्ण:वंश, स्थान और समय	18
पत्नी घर का खजाना और पतिकुल की रक्षिका है	20
आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य	22
धूम्रपान व तम्बाकू	23
जीवन-संदेश	25
हंसो और हंसाओ	26
अमेरिका से पत्र प्राप्त	27
एक पेन्टर जो उद्योगपति से साधु बन गयाः	29
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

अगस्त मासिक सत्संग सम्पन्न

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रूखनगर गुड़गांव का मासिक सत्संग व बृहद यज्ञ का कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह के साथ रविवार दिनांक 07.08.2016 प्रातः 8 बजे से मध्यांह 12.30 बजे तक कई विशेषताओं के साथ पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी मुख्याधिष्ठाता आश्रम के सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

बृहद यज्ञ के यजमान श्री अशोक कुमार जी जून इंजीनियर आश्रम ट्रस्टी धर्मपत्नी श्रीमती वनिता देवी जी जून के साथ सुशोभित हुए। यज्ञ श्री ध्रूवशास्त्री एवं प्रवीण शास्त्री गुरुकुल झज्जर के स्नातकों के ब्रह्मत्व में विधि विधान के साथ सम्पन्न होने पर माननीय श्री कृष्ण राठी डायरेक्टर (सी.सी.एस.सी., सैकेण्डरी स्कूल बिरहेड़ा मोड़) की अध्यक्षता में। मंच संचालन श्री आचार्य चांद सिंह द्वारा कुशलतापूर्वक किया गया, विशिष्ठ अतिथि महन्त श्री निर्माण पुरी जी महाराज गौशाला फर्रूखनगर पधारे, श्री हरिश मुनि जी वानप्रस्थी, उपदेशक आश्रम, श्री ईश्वर सिंह जी आर्य बहादुरगढ़ श्री राधेश्याम जी आर्य दिल्ली, श्री ध्रूव शास्त्री के भजनों का कार्यक्रम प्रभावशाली रहा। श्री सत्य पाल जी वत्सार्य आश्रम ट्रस्ट मन्त्री, श्री चांद सिंह जी आर्य डी घल आश्रम के विशेष सहयोगी श्री ईशमुनि जी वानप्रस्थी आदि के व्याख्यानों का सुन्दर कार्यक्रम चला। कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाने की व्यवस्था में डॉ. सतीश आर्य एवं श्री विक्रम जी प्रधान के साथ युवा क्लब फाजिलका के युवकों का भरपुर सहयोग रहा। विशेष आयोजन स्वर्गीय श्री प्रताप सिंह जी मलिक थानेदार की स्मृति में उनके सुयोग्य सुपुत्रों श्री अश्विन मलिक एवं अनुपमलिक मॉडल टाऊन बहादुरगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित आकर्षक भव्य आसनों के चार्ट का विमोचन श्रद्धेय स्वामी धर्ममुनि जी महाराज के करकमलों द्वारा होने पर निःशुल्क वितरण किया गया। शान्तिपाठ के पश्चात् श्री अशोक जून यजमान परिवार द्वारा उत्तम स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था की गई। सत्संग में पधारे भारी संख्या में सत्संगियों द्वारा कार्यक्रम की सराहना की गई।

जीवन बहुमूल्य है इसका विवेक पूर्वक उपयोग ही मानव मात्र के लिए हितकारी है। अन्यथा यह कम भयावह नहीं।

जन्मदिवस पर यज्ञ सत्संग का आयोजन

श्री अशोक कुमार जी श्रीमति आशा देवी जी नागपाल झज्जर द्वारा अपने सुपौत्र आयुष्मान् अनिक नागपाल का 10वां जन्मदिवस अत्यन्त उत्साह के साथ भव्य यज्ञशाला रविवार 7 अगस्त 2016 को सायं आत्म शुद्धि आश्रम की भव्य यज्ञशाला में यज्ञ-सत्संग का आयोजन श्रद्धा पूर्वक किया गया। चिरञ्जिव अनिक की माता श्वेता देवी पिता श्री अमित नागपाल यजमान् आसन पर सुशोभित हुए। इस शुभ अवसर पर नागपाल परिवार एवं सहायक रिश्तेदार सम्बन्धी झज्जर, बहादुरगढ़ आदि भिन्न-भिन्न स्थानों से प्रयाप्त संख्या में पधारे, कर्ण आर्य द्वारा यज्ञ सम्पन्न करवाया गया। श्री रामदेव जी आर्य द्वारा बधाई गीत और श्रीमती रानी नरूला द्वारा भजन गाये गये। वा. पुरुषार्थमुनि जी और रवि शास्त्री जी द्वारा आशीर्वाद व शिक्षा पद उपदेश दिये गये। स्वामी धर्ममुनि जी द्वारा जन्मदिवस एवं जीवन निर्माण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए यजमान परिवार को शुभकामनाओं के साथ हार्दिक आशीर्वाद दिया। अन्त में डॉ. अशोक नागपाल जी ने आयोजन में पधारे हुए सभी आगुन्तकों का धन्यवाद किया। प्रसाद वितरण के पश्चात परिवार की ओर से स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था उत्तम की गई।

भूल सुधार

(1) अगस्त अंक पृष्ठ 11 पर प्रकाशित कविता "समय की गति" कवि कृष्ण 'सौमित्र' साहित्यालंकार बहादुरगढ़ की है। भूल से सुदेश सुनेजा धर्मपुरा बहादुरगढ़ प्रकाशित हो गया और सुदेश सन्दुजा का नाम सुदेश सुनेजा भी गलत छपा है। हमें दोनों बातों का खेद है।

(2) चौ. उदयसिंह मान पंचत्व में विलीन अगस्त अंक पृष्ठ 3 दूसरे पहरे में नीचे पुरस्कार दो में प्रथम अक्टूबर 1915 असावधानी से छपा है कृप्या 2015 सुधार कर पढ़े। असावधानी के लिए क्षमा।

– व्यवस्थापक

जन्मदिवस मनाया गया

श्री रामफल सिंह जी एवं श्रीमति राजबाला दलाल रामनगर बहादुरगढ़ द्वारा अपने सुपुत्र प्रदीप दलाल अमेरिका में निवास करते हैं के शनिवार 20 अगस्त 2016 को 43वें जन्मदिवस के शुभ अवसर पर यज्ञ–सत्संग का आयोजन आत्मशुद्धि आश्रम की यज्ञशाला में किया गया। स्वामी धर्ममुनि जी द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्री रामफल सिंह जी और श्रीमती राजबाला दलाल स्वयं यजमान बने, श्री रामदेव जी द्वारा बधाई गीत गाया गया, स्वामी धर्ममुनि जी द्वारा जन्मदिवस विषय पर प्रकाश डाला गया। प्रदीप जी के छोटे भाई श्री सुमित दलाल द्वारा भोजन की उत्तम व्यवस्था की गई।

आवश्यक निवेदन

फर्रूखनगर आश्रम में प्रत्येक मास के द्वितीय रविवार को मासिक यज्ञ सत्संग का प्रातः 8 बजे से 12 बजे तक आयोजन सुव्यवस्था एवं उत्साह के साथ किया जाता है, शान्ति पाठ के पश्चात ऋषिभोज- भोजन की सुन्दर व्यवस्था की जाती है।

अतः आप सभी सत्संग प्रेमियों से निवेदन है कि मासिक सत्संग में ईष्ट मित्रों, परिवार सहित पधार कर सत्संग लाभ उठाएं और हमारा उत्साह बढ़ाएं। यजमान बनने के इच्छुक दम्पति सम्पर्क सूत्र 9416126977 मासपूर्व अपना नाम लिखवाने का कष्ट करें।

– धन्यवाद

प्रथम पुण्य तिथि पर यज्ञ

श्री शरद एवं श्री शिशिर सिसोदिया श्याम विहार दिल्ली द्वारा अपने पूज्य पिता श्री अशोक सिसोदिया जी की प्रथम पुण्यतिथि पर रविवार 21 अगस्त को आत्मशुद्धि आश्रम की विशाल यज्ञशाला में यज्ञ सत्संग का आयोजन कर श्रद्धांजलि दी गई। दोनों भाई श्री शरद सिसोदिया धर्मपत्नी श्रीमती संगीता देवी जी एवं श्री शिशिर जी धर्मपत्नी श्रीमती रेखा सिसोदिया पत्नियों सहित यजमान बने, पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी के ब्रह्मतत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्री रवि शास्त्री जी द्वारा वेद पाठ किया गया और **मृत्योर्मा अमृतगमय** विषय लेकर गुणग्राही प्रवचन दिया। श्रीमती सुदेश सन्दूजा धर्मपुरा बहादुरगढ़ द्वारा भजन के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्री आलोक कुमार जी (बीची भईया) द्वारा अपने मामा अशोक सिसोदिया जी की श्रद्धांजलि देते हुए उनके जीवन पर प्रकाश डाला। अशोक सिसोदिया के बड़े भाई श्री आनन्द कुमार सिसोदिया जी ने बताया कि हमारे सभी बहिन भाईयों के मध्य में अशोक का सबसे आकर्षक जीवन व्यवहार रहा। हम बड़ों को भी उनके जीवन से शिक्षा मिलती थी। मुझे इस बात का बड़ा दु:ख है कि पहिले मुझे जाना था पर चला गया अशोक। श्री स्वामी धर्ममुनि जी ने अपना प्रवचन देते हुए कहा कि श्री अशोक सिसोदिया आश्रम में रहते थे, आश्रम की शान उनका आकर्षक शरीर ऋषियों मुनियों जैसा लगता था, अपने बुजुर्गों की पुण्य तिथि मनाना कृत धन्तो के दोष से बचने का साधन है और उनके पद चिन्हों पर चलते हुए धार्मिक एवम् परोपकार के कार्य करते रहना चाहिए,

स्वामी जी द्वारा बताया गया कि सिसोदिया जी बहुत अच्छे कवि थे प्रवचन सुनते थे उसे कविता में बांध देते थे और अगले दिन सुना देते थे। आश्रम द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र में उनकी कविताएं प्रकाशित होती रहती थी, उनकी कविताएं कॉपियां में संग्रह की हुई है, सिसोदिया जी द्वारा, मैं समझता हूं कि परिवार द्वारा संग्रहित कविताएं प्रकाशित हो जाएं तो उनको सार्थक श्रद्धांजलि दी जाएगी और पढ़ने वालों को प्रेरणा मिलेगी। आपके परिवार को शान्ति मिलेगी। इस अवसर पर रिश्तेदार सम्बन्धी आदि काफी संख्या में श्रद्धांजलि देने पधारे। अन्त में भारती सिसोदिया द्वारा सभी का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए स्व. पतिदेव को श्रद्धांजलि दी गई और सिसोदिया परिवार द्वारा सभी के भोजन की व्यवस्था की गई।

वेद सन्देश

जंगम-स्थावर का राजा

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा,
शमस्य च शृङ्गिणो वज्रबाहुः।
सेदु राजा क्षयति चर्षणीनाम्,
अरान्न नेमिः परि ता बभूव॥

ऋग् 1.32.15

ऋषिः **हिरण्यस्तूपः आङ्गिरसः**। देवता **इन्द्रः**। छन्द:**त्रिष्टुप्**।

(वज्रबाहुः) वज्रभुज **(इन्द्रः)** परमशेवर **(यातः)** चलने-फिरने वाले का, **(अवसितस्य)** निश्चल का **(शमस्य)** शांत का, **(शृङ्गिणः च)** और तीक्ष्ण वृत्ति वाले का **(राजा)** राजा है। **(सः इत्)** वही **(चर्षणीनां)** मनुष्यों का **(राजा)** राजा (होकर) **(क्षयति)** निवास कर रहा है। **(अरान्)** अरों को **(नेमिः न)** परिधि के समान (वह) (ता) उन्हें **(परि बभूव)** चारों ओर से व्याप्त किये हुए है।

मैं अपने इन्द्र प्रभु का क्या वर्णन करूँ, कैसे उसकी महिमा का गान करूँ? उसकी महिमा के गीत गाने को जी चाहता है, पर वाणी में शब्द नहीं मिलते। फिर भी टूटे-फूटे शब्दों में ही सही, कुछ तो गुनगुना लूँ, कुछ तो अपने मन की साध पुरी कर लूं। मेरा प्रभु चलने-फिरनेवाले जंगम अर्थात् चेतन जगत् और निश्चल होकर बैठे स्थान पर अर्थात् जड़-जगत् दोनों का राजा है, दोनों पर उसका आधिपत्य है। वह पशु, पक्षी,सरीसृप, मानव आदि तथा वन, पर्वत, नदी, सागर, सूर्य, चन्द्र आदि सबका अधिष्ठाता और व्यवस्थापक है। उसकी आज्ञा के बिना एक पत्ता तक नहीं हिल सकता। वह शान्त-जीवन-व्यतीत करनेवाले, तप-साधना में निरत रहने वाले शान्तवृत्ति ऋषि-मुनियों का भी राजा है और तीक्ष्ण अर्थात् तीक्ष्ण साधनों का अवलम्बन करनेवाले तीक्ष्णवृत्ति रजोगुणियों का भी राजा है, नियन्त्रणकर्ता है। वह वज्रबाहु है, भुजा में वज्र धारण किये है और उच्छङ्खलों को उनके उच्छङ्खल कर्मो के अनुसार यथायोग्य दण्ड दे रहा है। कोई उसकी दण्ड-व्यवस्था से कितना ही बचना चाहे, बच नहीं सकता। वही हम सब 'चर्षणियों का, कृषिकर्ता मानवों का, भी राजा होकर निवास कर रहा है, चाहे हम अपनी मनोभूमि का कर्षण करके उसमें सद्गुणों का बीज वपन कर आन्तरिक सम्पदा को लहलहाते हों, चाहे हल चलाकर, उत्तम बीज बोकर बाह्य भूमि को सस्यश्यामला बनाते हों।

जैसे रथ-चक्र की नेमि समस्त अरों को चारों ओर से व्याप्त किये होती है और अपने में थामे होती है, वैसे ही जगत् का राजा वह इन्द्रदेव जगत् की सब वस्तुओं के चारों और व्याप्त होकर उन्हें सहारा दिये हुए है, तभी संसार के सब पदार्थ पृथक्-पृथक् इकाई होते हुए भी परस्पर सामंजस्य रखे हुए हैं और विश्व के चक्र को चला रहे हैं। अन्यथा उनकी स्थिति वैसी ही हो जाए, जैसी नेमि के टूट जाने पर रथ-चक्र के अरों की होती है, तब विश्वचक्र-प्रवर्तन ही समाप्त हो जाए।

आओ हम एक स्वर से अपने उस राजराजेश्वर इन्द्र के चरण-चंचरीक बनकर उसकी महिमा का गुंजार करें। - वेद मञ्जरी

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम "दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर"। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, चलभाष: 9416054195

सम्पादकीय

संस्थाओं और वार्षिकोत्सवों का महत्व

- स्वामी धर्ममुनि

लोककृतः पथिकृतो यज्ञामहे।।

(अथर्व 18.3.15)

आश्रमप्रेमी माताओ-बन्धुओं! वेद का सन्देश है कि 'लोक-निर्माता और पथ-निर्माताओं की हम पूजा करते हैं।' आओ विचार करें-आश्रम, मन्दिर और तीर्थ स्थान आदि भारतीय संस्कृति एवं परम्परा के देदीप्यमान स्तम्भ हैं, समय-समय पर जनता को पथभ्रष्ट होने से बचाते रहते हैं। सद्प्रेरणा देते रहते हैं तथा जनजीवन में जागृति की भावना को प्रदीप्त करते रहते हैं। इन धार्मिक संस्थाओं के कारण ही भारतीय संस्कृति अनन्त वर्षों की अवधि में भी हूणों, यवनों और गोरों द्वारा नष्ट-भ्रष्ट करने के पश्चात् भी ज्यों की त्यों विद्यमान है इसे समाप्त करने के लिए अनेकों विदेशी आक्रान्ता आये, उन्होंने तलवार की धार से भारतीयों पर तथाभारतीय संस्कृति पर विजय पाने की इच्छा की परन्तु सभी असफल रहे। शरीर से तो गुलाम बना लिया, परन्तु मन-बुद्धि से भारतीय संस्कृति के विचार नहीं निकाल सके। हमारे गुरुकुलों-आश्रमों से भारतीय सभ्यता संस्कृति का प्रचार-प्रसार होता रहा। इन्हीं आश्रमों की देन है कि आज अपना देश अनेकों आंधी-तूफानों से निकलकर राजमार्ग पर आ खड़ा हुआ है, जिससे देश की आगे की यात्रा सरल दिखाई दे रही है। यह स्थिति भारतीय संस्कृति की देन है। बस यह ही आश्रमों का विशेष महत्व है। संस्कृति के रक्षक तथा प्रचारक आर्य मन्दिर, गुरुकुल तथा आर्यसमाज आदि धर्म संस्थान हैं।

बन्धुओ! इस प्रकार के धर्म संस्थानों का निर्माण देश के उत्थान के लिए अत्यन्त उपयोगी है। विशेष रूप से आज जनजीवन में नैतिकता, चारित्रिकता एवं धार्मिकता को पनपाना अत्यन्त अनिवार्य हैं भ्रष्ट राजनेता भारत को पुनः गुलामी की ओर ले जा रहे हैं। देश पतन से बचे, गुलामी के मार्ग पर न चले, यह उद्देश्य लेकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं राष्ट्रनायक 'जय जवान-जय किसान' नारे के उद्घोषक श्री लालबहादुर शास्त्री जी की पावन तिथि 2 अक्टूबर 1967 को आत्मशुद्धि आश्रम की स्थापना कर्मयोगी पूज्यपाद श्री आत्मस्वामी जी महाराज द्वारा एक छोटे से कमरे सांपला में की गई। शीघ्र ही सांपला को छोड़ 30 रूपये का कमरा किराये पर लेकर बहादुरगढ़ में सेवा कार्य आरम्भ कर दिया। 49 वर्षों के दीर्घकाल में आश्रम द्वारा जनता की जो सेवाएं की हैं, उन सेवाओं के कारण ही 30 महीने का कमरा आज वामन रूप धारण कर चुका है, विशाल वटवृक्ष बन गया है, जिसकी छाया में अनेकों गर्मी व ताप से बचकर आनन्द में झूम रहे हैं। आश्रम कितना उपयोगी सिद्ध हुआ है, यह तो पाठकों को आश्रम द्वारा समय-समय पर प्रकाशित की गई। स्मारिक-परिचायिकाओं आदि द्वारा परिचय मिलता रहा है। पूज्यपाद आनन्द स्वामी जी महाराज के करकमलों द्वारा विमोचित 'आत्म शुद्धि पथ' भी प्रत्येक मास में आपके करों में पहुंचकर आश्रम कार्यो का और स्वयं की उपयोगिता का परिचय देता रहता है।

हितैषी बन्धुओं! आप आश्रम की सेवाओं से परिचित हैं, यह जानता हुआ भी संक्षेप में वर्तमान में चल रहे सेवा कार्यो का परिचय देना अत्यन्त आवश्यक समझता हूं।

आपके प्रिय आश्रम में मार्च, जून, और सितम्बर-अक्टूबर में निश्चित होने वाले 3 वृहद्यज्ञों साधना शिविरों के अतिरिक्त 20 नवम्बर को चतुर्थ यज्ञ और विशेष-विशेष अवसरों पर उत्सवों का एवं चरित्र निर्माण, शराबबन्दी, गौरक्षा प्राकृतिक चिकित्सा, स्वास्थ्य जांच, रोगानिवरणादि विविध शिविरों एवं विविध सम्मेलनों का आयोजन होता रहता है। 49 वर्षो में बृहद्यज्ञों-स्वस्ति यज्ञ विजययज्ञ, योग यज्ञ, एक-एक वेद और चारों वेदों के यज्ञ अनेकों बार आश्रम की शोभनीय यज्ञशाला में आयोजन हुए हैं।

वर्तमान में 20 साधक साधिकाएं आश्रम में निवास करते हैं। आश्रम में धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय प्रतिदिन प्रातः 8 से सायं 5 बजे तक नेत्र जांच की जाती है। ऑप्रेशन भी फ्री किये जाते हैं, चिकित्सालय द्वारा गुरुकुल बालकल्याण जिसमें निःशुल्क 50 छात्र पहली से 12वीं तक की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। श्रीकर्ण गौशाला, योगासनों का प्रशिक्षण, पुस्तकालय- वाचनालय ऋषिलंगर' आदि अनेकों सेवा कार्य चल रहे हैं। दोनों समय यज्ञ-सत्संग, साहित्य प्रकाशन होता रहता है। प्रतिष्ठित 15 सदस्यों का ट्रस्ट बना है। जिनके सहयोग से कार्य सुचारू रूप से चलते रहते हैं।

अस्तु। आश्रम की दूसरी शाखा अक्षेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रूखनगर गुड़गांव में दो अकड़ भूमि पर भव्य दोहाल, विशाल यज्ञशाला, साधना कुटिया निवास के लिए आधुनिक सुविधा से युक्त कमरे बनकर तैयार हो गए हैं। ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी,संन्यासी, कुल मिलाकर 12 उपदेशक फर्रूखनगर क्षेत्र ग्रामों और स्कूल कॉलेजों में शिवरों आदि के माध्यम से वेद प्रचार में संलग्न हैं।

सभी आश्रम सदस्यों-हितैषी श्रद्धालु भक्तों एवं आत्मशुद्धि पथ के पाठकों का ध्यान अन्त में एक बात की ओर दिलाना अत्यन्त आवश्यक समझता हूं। पूज्यपाद आत्मस्वामी जी द्वारा 2 अक्टूबर 1967 को आश्रम की स्थापना की गई और 1979 में स्थापना महोत्सव को सफल बनाने के लिए प्रचार में जुटे हुए थे। दिनांक 31 अगस्त रात्रि शयन समय 9.30 बजे रिछपालक गाड़ी चालक से कहा, प्रातः शीघ्र दिल्ली चलना है। परन्तु किसी को क्या पता कि भविष्य के गर्भ में क्या छिपा हुआ है। 'मेरे मन माही कछु और है, विधना के कुछ और।' स्वस्थ प्रसन्नचित्त वार्ता करते हुए सो गये। रात्रि 12.30 बजे अकस्मात् हृदय गति रूक गई, बेहोश हो गये। मृत्यु ने आकर दबोच लिया। शरीर पसीने से भीग गया। रात्रि 3.30 बजे सफदरजंग अस्पताल दिल्ली में ले जाये गये। जैसे आश्रम की स्थापना को लेकर आश्रम संचालनार्थ 31 अगस्त 1979 तक संघर्ष करते रहे, वैसे ही 31 अगस्त रात्रि से 6 सितम्बर 1979 गुरुवार पूर्णिमा के शुभ दिवस को प्राप्त करने के लिए मृत्यु से संघर्ष करते रहे। अन्त में जीवन संघर्ष और मृत्यु संघर्ष प्रातः ब्रह्म मुहूर्त के समय समाप्त हो गया। खत्म हो गई 2 अक्टूबर और मेरी कहानी।

अतः हमारा सभी का कर्तव्य बनता है कि पूज्य स्वामी जी महाराज को श्रद्धासुमन श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए संकल्प करें कि जैसे स्वामी जी वार्षिकोत्सव सफलतार्थ दिन-रात परिश्रम कर रहे थे, वैसे ही हम भी तन-मन-धन से पूरी शक्ति लगाकर 50वें वार्षिकोत्सव को सफलतापूर्वक मनाएं और सच्ची श्रद्धांजलि समर्पित कर ऋण से उऋण होने का प्रयास करें। वेद का आदेश है-यद्वशिमन् धायि तम् अपस्यायाविद्त। मनुष्य जिसे पाने की ठान लेता है, अर्थात् जिस कार्य को करने का मन बना लेता है, उसे कर ही लेता है। अतः आपसे निवेदन है कि वार्षिकोत्सव 26 सितम्बर से 2 अक्टूबर पर आप स्वयं पधारें और अपने इष्ट मित्रों को अधिक संख्या में लाने का प्रयत्न करें। उत्सव विज्ञापन कवर पृष्ठ पर देखें और आत्म शुद्धि पथ के सदस्य बनाकर, वेदप्रचार में सहयोगी बनें ओर 2017 में 50 वर्ष पूरे होने पर आश्रम का स्वर्ण जय महोत्सव सफल मनाने हेतु स्वसुझाव प्रेषित कर मार्ग दर्शन करने का कष्ट करें।

शुभकामनाओं आशा और विश्वास के साथ।

–स्वामी धर्ममुनि

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं–

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्मपुर रोड़, फर्रूखनगर, गुड़गांव के लिए भी सहयोग देकर उत्साहित करें।

धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

पुरुषार्थ चतुष्टय

- डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री

पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का सिद्धान्त भारतीय संस्कृति की विशेषता है। मनुष्य का आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक उन्नति को देखते हुए प्राचीन ऋषि महर्षियों ने इस सिद्धान्त की संरचना की तथा इसकी व्यवस्था की थी। पुरुषार्थ का अर्थ है-पुरुष का अर्थ अर्थात् मनुष्य जीवन का प्रयोजन, मनुष्य जीवन का मुख्य उद्देश्य, लक्ष्य अथवा प्रयोजन जिनके माध्यम से पूर्ण होते हैं वे हैं पुरुषार्थ चतुष्टय। मनुष्य जीवन का मुख्य उद्देश्य है-सुखी एवं शान्तमय जीवन। जब मनुष्य अपनी इच्छाओं को अथवा अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है तब वह सुखी हो सकता हैं। मनुष्य ही पुरुषार्थ की सिद्धि कर सकता है। पुरुषार्थ की संख्या चार मानी गई है-धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष।

धर्म- धर्म शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है-धारण करने वाला। ध्रियते लोकोऽनेन, धरति लोकें वा, जो संसार को धारण करता है वह धर्म है। धर्म ही प्रजा को धारण करता है। धर्म ही परिवार, समाज और राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करता है।

धारणाद् धर्ममित्याहुर्धर्मो धारयते प्रजाः।
यत् स्याद् धारणसंयुक्त स धर्म इति निश्चयः॥

महा. कर्ण. 69/59

महर्षि कणाद ने वैशेषिक सूत्र में लिखा है-

यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्धि स धर्मः।

अर्थात् जिससे अभ्युदय (भौतिक उन्नति)तथा निःश्रेयस आध्यात्मिक उन्नति होती है, वह धर्म है। वस्तुतः धर्म का सम्बन्ध मानव जीवन के आचरण के साथ जुड़ा हुआ है।

धृतिः क्षमादयोऽस्तेयं शोचमिन्द्रिय निग्रहः
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

मनु 6.12

धैर्य, क्षमा, मन पर नियन्त्रण, चोरी न करना, पवित्रता, इन्द्रियों पर अधिकार, बुद्धि, विद्या, सत्य, क्रोध न करना ये धर्म के दश लक्षण हैं। जो कार्य ओर आचरण व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र की उन्नति करने के सहायक हैं, वे धर्म हैं। अवनति की ओर अग्रसर करने वाला व्यवहार एवं आचरण ही अधर्म हैं।

शुक्रनीति में राजधर्म के अन्तर्गत देशधर्म, जातिधर्म, कुलधर्म, सनातन धर्म, प्राचीन धर्म और नवीन धर्म का उल्लेख मिलता है।

देशधर्माः जातिधर्माः, कुलधर्माः सनातनाः।
मुनिप्रोक्ताश्च ये धर्माः। प्राचीनाः नूतनाश्च॥

शुक्रनीति 4/9

भारतीय परम्परा में सबसे ज्यादा महत्व धर्म को ही दिया गया है। भर्तृहरि ने नीतिशतक में धर्म के सम्बन्ध में लिखा है एवं कहा है धर्म से रहित मनुष्य पशु के समान हैं-

येषां न विद्या न तपो न दानं।
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः॥
ते मर्त्यलोके भुविभारभूताः॥
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥

अन्यत्र भी उल्लिखित है कि धर्म ही वह तत्व है जो मनुष्य को पशुओं से अलग करता है। क्योंकि आहार, निद्रा, भय एवं सन्तान उत्पन्न करना ये चारों मनुष्य एवं पशुओं में समान हैं। धर्म के कारण मनुष्य की अलग पहचान है।-

आहार निद्रा भय मैथुनं च
सामान्यमेतद् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो
धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।

धर्म के विषय में यहाँ तक कहा गया है-

धर्म एवं हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत्।

मनु 8/15

अर्थात् जो धर्म को मार देता है या छोड़ देता है, धर्म भी उसे छोड़ देता है और जो धर्म की रक्षा करता है धर्म भी उसकी रक्षा करता है।

महाभारत में वेदव्यास लिखते हैं-

न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्

धर्म त्येजीवितस्यापि हेतोः।
धर्म नित्यः सुख दुःखे त्वनित्ये।
जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः।

महा. स्वर्गारहिण पर्व। 5.63

अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, भय तथा जीवन के डर से भी धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि सुख, दुःख, आदि तो अनित्य हैं नित्य तो केवल धर्म है।

कुमार सम्भव में कालिदास ने धर्म को त्रिवर्ग का सार कहा है-

अजेन धर्मः सविशेषमद्य में त्रिवर्गसारः प्रतिभाति भाविनि कुमार 5/38

भारतीय संस्कृति में धर्म का अर्थ सम्प्रदाय नहीं है। भारतीय परम्परा में सदाचार, अहिसापालन तथा कर्तव्य बुद्धि को धर्म कहा गया है। अपना कर्तव्य पालन ही सबसे बड़ा धर्म है एवं कर्तव्य से विमुख होना अधर्म है। धर्म का कोई बाह्य चिह्न नहीं होता है।

न लिंङ्ग धर्मस्य कारणम्।

धर्म का सम्बन्ध तो आत्मा से है तभी किसी भद्र व्यक्ति को धर्मात्मा कहा जाता है।

अर्थ- भारतीय जीवन दर्शन में भौतिक उन्नति एवं आध्यात्मिक उन्नति का समान महत्व है। जैसे एक पहिये की गाड़ी चल नहीं सकती ऐसे ही एक ही उन्नति से जीवन चल नहीं सकता है।

चाणक्य सूत्राणि 1.1.2 में लिखा है।

सुखस्य मूलं धर्मः- अर्थात् सुख का मूल धर्माचरण **धर्मस्य मूलम् अर्थः**- धर्म का मूल अर्थ है। अर्थात् अर्थ से ही धर्माचरण सम्भव है। वेद में भी लिखा है-

वयं स्याम पतयो रयीणाम्।

अर्थात् हम धन ऐश्वर्य के स्वामी बनें। मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति (रोटी, कपड़ा एवं मकान) अर्थ से ही संभव है। किसी नीतिकार का वचन है-

प्रथमेनार्जिता विद्या, द्वितीयेनार्जितं धनम्। तृतीये नार्जितं पुण्यं चतुर्थे किं करिष्यति।

यदि पहली अवस्था में विद्या नहीं पढ़ी, दूसरी अवस्था (युवावस्था) में धन नहीं कमाया, तीसरी अवस्था में तप के द्वारा पुण्यार्जन नहीं किया तो चौथी अवस्था में वह व्यक्ति क्या करेगा?

नारद स्मृति में महर्षि नारद सभी कामों को अर्थमूलक मानते हैं तथा धनार्जन के लिए प्रेरित करते हैं-

अर्थमूलाः क्रियाः सर्वा यत्नस्तस्यार्जने मतः।

विद्या से विनय, विनय से पात्रता एवं पात्रता से धन एवं धन से धर्म यह संसार में प्रसिद्ध है-

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्मः ततः सुखम्।

उद्यमी, शिष्टाचारी, संयमी एवं विनयीशील व्यक्ति धनार्जन उत्तम रीति से करता है।

हितोपदेश की प्रस्तावना श्लोक में वर्णित है-

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः।

अर्थात् उद्योगी व्यक्ति को लक्ष्मी प्राप्त होती है। परन्तु व्यक्ति को सदा यह ध्यान रखना चाहिए कि अर्थ का अभाव एवं अर्थ का प्रभाव दोनों मनुष्य के लिए हानिकारक हैं। अर्थोपार्जन करते समय व्यक्ति को सदैव धर्म का ध्यान रखना चाहिए। अधर्मपूर्वक संचित अर्थ अनर्थ कर देता है। धन वही श्रेष्ठ है जो जीवन को धन्य कर दे।

अर्थ के कारण धरती को वसुन्धरा कहा गया है। आचार्य आनन्द वर्धन ने ध्वन्यालोक के प्रथम उद्योग में कहा है कि-वीर विद्वान तथा सेवा करने की योग्यता वाले व्यक्ति ही धनार्जन कर सकते हैं-

सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरूषास्त्रयः।
शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम्।

अन्न एवं वस्त्र को भी अर्थ की संज्ञा दी गई है। सभी नीतिशास्त्र धनी की प्रशंसा एवं निर्धन की निन्दा में हजारों श्लोक लिखे हैं-भर्तृहरि का कथन है-

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः
सः पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीय
सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति॥

अर्थात् जिसके पास अर्थ है वही श्रेष्ठ है, वही कुलीन है, वही विद्वान, वक्ता, गुणी, दर्शनीय है क्योंकि सारे गुण धनाश्रित हैं।

निर्धन व्यक्ति का जीवन अभिशाप की भांति है उसकी कोई बात नहीं सुनता, मित्र तथा पारिवारिक जन भी तिरस्कार का भाव रखते हैं, उसका गुण भी दोष हो

जाता है। मृच्छकटिक में चारूदत्त की निर्धनता का वर्णन करते हुए बताया गया है कि वह अतिशय कष्ट का अनुभव करता है। भर्तृहरि ने धन को जाति, गुण समूह, सदाचार, कुलीनता, वीरता आदि की अपेक्षा श्रेष्ठ सिद्ध किया है।

राजतन्त्र की दृष्टि से भी अर्थ सबसे महत्वपूर्ण है। राज्य की सप्ताह प्रकृति में कोश को प्रमुख माना गया है- **कोशमूलाः सर्वरम्भाः।** कौटिल्य अर्थ 2.8.1।

भारतीय चिन्तन में धर्मानुसार धनोपार्जन श्रेष्ठ माना गया है तथा अतिव्यय, अपव्यय, गवन आदि को दोष माना गया है।

काम का अर्थ है-कामना, इच्छा, स्नेह, अनुराग, प्रेम, अभिलाषा, विषय, इच्छित पदार्थ। काम का सृष्टि में असंख्य आधार है। जैसे-विषय के प्रति काम विषयेच्छा है। धन के प्रति काम-लोभ है। व्यक्ति विशेष की कामना मोह हैं स्व. की कामना अहंकार है, प्रभु की कामना भक्ति है, किसी निष्ठा में कामना विश्वास है आत्मीयता में काम स्नेह है, धारणा स्थित काम श्रद्धा है। प्रजापति ने कामना की मैं एक से बहुत हो जाऊं-सोऽकामयत एकोऽहं बहुस्यां प्रजायेतेति। अतः उसने काम के द्वारा सृष्टि की रचना की।

काम- मनुष्य जीवन के उद्देश्यों में तीसरा पुरुषार्थ काम है। काम शब्द का प्रयोग इच्छा कामना, वासना के अर्थ में किया जाता है। **काम्यते कामयते येन यस्मिन् वा सः कामः** कमु कान्तौ धातु से काम शब्द की निष्पत्ति हुई है। इस व्युत्पत्ति के अनुसार विषय और इन्द्रिय संयोग से उत्पन्न मानसिक आनन्द काम है। मनुष्य की सांसारिक यात्रा में जो स्थान धर्म और अर्थ का है वही 'काम' का भी है। इसलिए इन तीनों को 'त्रिवर्ग' कहा जाता है।

काम सभी श्रेष्ठ कार्यो का आधार है। किसी को आशीर्वाद दिया जाता है तो कहा जाता है-

सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।

अर्थात् यजमान की सभी कामनाएं, इच्छाएं पूर्ण हों। काम सृष्टि के मूल में है। इसी से संसार की रचना आगे बढ़ती है। काम भाव गृहस्थ धर्म एवं सन्तान उत्पत्ति का मूल आधार है। जब मनुष्य अभिलषित पदार्थो की प्राप्ति के लिए उद्योग करता है वहीं 'काम' है। अपनी इच्छित वस्तु को पाकर जो आनन्द मिलता है वही काम है।

ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में कहा है-

काम से ही सृष्टिक्रम का विकास हुआ है-

कामस्तदग्रे समवर्तताधि मनसो रेत प्रथमं यदासीत्।

ऋग्वेद 10/129/4

मनुष्य संसार में जो कुछ भी करता है उसके मूल में काम है, बिना काम के मनुष्य की कोई भी क्रिया नहीं हो सकती है-

अकामस्य क्रिया काश्चिद दृश्यते नेह कर्हिचित्।
यद्यद्धि कुरूते किंचित् तत्तस्कामस्य चेष्टितम्।

वस्तुतः काम मानसिक संकल्प का परिणाम है। कौटिल्य अर्थशास्त्र में कहा गया है-

धर्मार्थाविरोधेन कामं सेवेत।

अर्थात् धर्म और अर्थ के अनुसार ही काम का सेवन करना चाहिए।

कालिदास ने यौवने विषयैषिणाम् रघु 1/8 तथा **प्रजायै गृहमेधिनाम्** लिखकर विवाह का उद्देश्य सन्तान उत्पत्ति मानकर काम को नियन्त्रित किया है। काम चेतन का सतत् स्वभाव है। काम प्राणी के अस्तितत्व से जुड़ा हुआ है। परन्तु काम केवल वासना रूप होने से व्यक्ति को पतन की ओर ले जाता है तथा इच्छित वस्तु के न मिलने पर क्रोध आदि का कारण भी बनता है गीता में उल्लिखित है-

काम एष क्रोध एष रजोगुण समुद्भवः। 3.37
कामात्क्रोधोऽभिजायते। गीता 2.6

महाभारत के शान्तिपर्व में धर्म और अर्थ के विरूद्ध काम का सेवन बुद्धि नाश का कारण माना गया है।

यो धर्मोर्थौ परित्यज्य काममेवानुसेवते।
स धर्मार्थपरित्यागात् प्रज्ञानाशमिहार्च्छति।

महा. शान्ति पर्व 123/15

सारांशतः काम को पूरी तरह से छोड़ना तथा एकमात्र उसी को ही ग्रहण करना, ये दोनों ही अनुचित है। जब काम धर्मानुकूल एवं अर्थानुकूल होता है वही पुरुष का प्रयोजन, उद्देश्य पूर्ण करता है तथा पुरुषार्थ कहलाता है।

(शेष पृष्ठ 17 पर)

स्वाध्याय

– राज कुकरेजा

स्वाध्याय शब्द दो शब्दों के जोड़ से बना है. सु+अध्याय और स्व +अध्याय सरल भाषा में इस का अर्थ कर दिया जाता है कि अच्छी पुस्तकों को पढ़ना और स्वयं का निरीक्षण करना अर्थात आत्म निरीक्षण करना। ऋषि पतंजली जी ने अष्टांग योग में पांच नियम बताये हैं और स्वाध्याय को नियम के अंतर्गत लिया है। ऋषि वेद व्यास जी जिन्होंने योग दर्शन का भाष्य किया है, उन्होंने इस स्वाध्याय शब्द को अति सुंदर ढंग से खोला है. स्वाध्याय का एक अर्थ किया है, उन शास्त्रों को पढ़ना जिन का विषय मोक्ष है और दूसरा अर्थ किया है प्रणव अर्थात् ओ३म् का जप करना. स्वाध्याय बौद्धिक शास्त्रों का और आध्यात्मिक शास्त्रों का किया जाता है। आजकल विद्यालयों में, विश्वविद्यालयों में प्राय: बौद्धिक शास्त्रों का ही अध्ययन-अध्यापन का प्रचलन है। इन शास्त्रों को पढ़ कर छात्र अपनी-अपनी रूचि अनुसार जो विषय लेना चाहते हैं, लेते हैं। डाक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक वकील और अध्यापक इत्यादि बन कर जीविका उपार्जन कर रहे हैं. बौद्धिक विज्ञान में उचित-अनुचित का ज्ञान बहुत ही कम दिया जाता है, जिस कारण व्यक्ति केवल जीवन का उद्देश्य अधिक से अधिक धन उपार्जन और अधिक से अधिक भोग सामग्री का संग्रह ही मान लेता है और इस की प्राप्ति हेतु अनुचित ढंग भी अपनाता है और असामाजिक काम भी करता है। आज का जो वातावरण है उस में यह माना जाता है कि येन केन प्रकारेण अधिक से अधिक धन का उपार्जन करना है, यदि धन के उपार्जन में सत्य का हनन होता है, तो वह धन, धन या अर्थ न होकर अनर्थ होता है. धन से केवल भौतिक सुख प्राप्त होते हैं। आज हमारे समक्ष अर्थवाद, भोगवाद और अधिकारवाद का बहुत बड़ा तूड़ान उपस्थित है। इस का सबसे बड़ा कारण आध्यात्मिक शिक्षा से बच्चों को वंचित रखना मान लिया जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी. उचित व अनुचित का ज्ञान आध्यात्मिक शास्त्रों के अध्ययन से ही मिलता है। इस से ही मानव जीवन का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि भी होती है. बुद्धि विकसित होती है, तर्क शक्ति बढ़ती है, सूक्ष्म विषयों को ग्रहण करने की क्षमता बड़ती है. ईश्वर, जीव, प्रकृति अर्थात तत्व ज्ञान होता है. प्रकृति सुख और मोक्ष सुख की तुलना कर सकते हैं. प्रकृति सुख क्षणिक है, हेय कोटि में आता है. इस लिए त्याज्य अर्थात छोड़ने योग्य है। मोक्ष सुख दीर्घ अवधि तक है. ग्रहण करने योग्य है इस लिए ग्रहण करने के उपाय करता है।

ऋषिव्यास जी ने स्वाध्याय का एक अर्थ जप किया है जिस को सामान्य जन नाम स्मरण कहते हैं। जब किसी शब्द अथवा मन्त्र को बार-बार दोहराया जाता है तो वो जप कहलाता है। विधि पूर्वक किये हुए जप से ही विशेष उपलब्धि होती है। जप प्रक्रिया में तीन बातो का विशेष ध्यान रखा जाता है. शब्द, अर्थ और भाव. प्रथम शब्द बोलते हैं, अर्थ बोलते हैं और भाव को पकड़ते हैं। भाव पकड़ने के बाद शब्द, अर्थ गौण हो जाते हैं, भाव प्रधान रहता है. उदाहरण के लिए हम ईश्वर के जो उसके गुण, कर्म और स्वभाव अनुसार अनंत नाम हैं, उनमें से अथवा ईश्वर का मुख्य निज नाम ओ३म् है, उस को लेते हैं शब्द ओ३म् है, अर्थ सर्व रक्षक है भाव बनाते हैं कि रक्षक तो कोई भी हो सकता है, जो सब ओर से रक्षा करे केवल वह ही ईश्वर है. ईश्वर स्वयं और अपने बनाये हुए पदार्थों से हमारी रक्षा कर रहा है. ईश्वर के संविधान-व्यवस्था से सूर्य, चन्द्रमा आदि बाहर से रक्षा करते हैं। ईश्वर इस सृष्टि को बनाता है, इस सृष्टि का पालन करता है. हमारे जीने की सारी व्यवस्था की हुई है. ईश्वर के कारण ही हमारे शरीर में रस, रक्त आदि धातु बनते हैं. ईश्वर प्रेरणा द्वारा भी रक्षा करता है. आत्मा को प्रभु की आवाज सुनाई न दे तो दोष किसका? मन में भय, लज्जा, और शंका जो दुष्कर्म, पाप करते समय मनुष्य के मन में उत्पन्न होती है, यही ईश्वर की प्रेरणा है. ईश्वर प्रेरक बन कर दुष्कर्मों से रक्षा करता है. भले ही जीव अनसुनी करके दुष्कर्म कर लेता है, जप काल में रक्षा के भाव का निरंतर चिन्तन करना ही प्रधान होता है. इस बीच में किसी अन्य वस्तु या विषय का स्मरण न करना ध्यान कहलाता है, जो योग की ऊंची अवस्था

है। योग दर्शन में इसे ही ऋषि पतंजली जी **तज्जपस्तदर्थभावनम् और तत्र प्रत्ययेकतानता ध्यानम्** के दो सूत्र दिए हैं। कई लोग मिथ्या धारणा के कारण जप को माला फेरना ही मान लेते हैं परन्तु वे यह नहीं समझते कि माला जप में साधक नहीं अपितु बाधक है। जप के स्वरूप को एक गुरु शिष्य की वार्ता से अच्छी प्रकार समझ सकते हैं। शिष्य गुरु के पास आकर बोला- 'गुरूजी हमेशा लोग प्रश्न करते हैं कि जप का असर क्यों नहीं होता, मेरे मन में भी यह प्रश्न चक्कर लगा रहा है।' गुरु उस समय यज्ञ में थे बोले ,' वत्स ! जाओ एक घड़ा शराब ले आओ।' शिष्य शराब का नाम सुनते ही अवाक् रह गया। गुरु और शराब ! वह सोचता ही रह गया. गुरु ने कहा सोचते क्या हो? जाओ एक घड़ा शराब ले आओ। वह गया और एक छलछल भरा शराब का घड़ा ले आया। गुरु के सम्मुख रख बोला- आज्ञा का पालन कर लिया. 'गुरु बोले-यह सारी शराब पी लो। 'शिष्य अचंभित, गुरु ने कहा शिष्य! एक बात का ध्यान रखना, पीना पर शीघ्र कुल्ला थूक देना, गले के नीचे मत उत्तारना। शिष्य ने वही किया, शराब मूंह में भर कर तत्काल थूक देता, देखते ही देखते घड़ा खाली हो गया; आकर कहा -गुरुदेव घड़ा खाली हो गया। 'तुझे नशा बिलकुल नहीं आया। अरे! शराब का पूरा घड़ा खाली कर गये और नशा नहीं चड़ा? 'गुरुदेव नशा तो तब आता जब शराब गले से नीचे उतरती, गले के नीचे तो एक बूँद भी नहीं गई। फिर नशा कैसे चढ़ता, बस जप भी गले से नीचे उतरता ही नहीं, व्यवहार में आता नहीं तो प्रभाव कैसे पड़ेगा? किसी कवि ने भी सुंदर कहा है-

माला फेरत युग गयो, मिटा न मन का मैल।
कर का मनका छोड़ के, मन का मनका फेर॥

समझाने की भाषा व शैली अलग-अलग हो सकती है लेकिन भाव एक ही है कि जप शब्द के भाव को ग्रहण कर के किया जाता है तो उस की विशेष उपलब्धि होती है। मन एकाग्र होता है।

आत्म निरीक्षण स्वाध्याय का ही अंग है. अपने दिन भर के किये गए क्रिया-कलापों का अवलोकन करना आत्म निरिक्षण है। क्या करना था जो नहीं किया और क्या नहीं करना था जो कर लिया। इस प्रकार अपनी भूलों और त्रुटियो को सुधार लिया जाता है। प्राय: व्यक्ति में दोष का बड़ा भाग तो यह है कि वह अच्छे कर्मों को करके नहीं देखता और बुरे कर्मों को छोड़ कर नहीं देखता। इसलिए अच्छे कामों में प्रवृति नहीं होती और बुरे कामों से निवृति नहीं होती।

मोक्ष शास्त्रों का अध्ययन, जप और आत्म निरीक्षण ये तीनों ही स्वाध्याय है, स्वाध्याय मोक्ष के साधनों में एक साधन है. प्रचीन काल में जब ब्रह्मचारी का समावर्तन संस्कार होता था, जिसे आज की भाषा में दीक्षांत समारोह (convocation) कहा जाता है, गुरु शिष्य को अंतिम उपदेश दे कर विदा करता 'स्वाध्याय मा प्रमादः' स्वाध्याय में कभी अनध्याय और अवकाश नहीं होता। ब्रह्मचारी, गृहस्थी और वानप्रस्थी इन तीनों आश्रमों के लिए अग्निहोत्र को अनिवार्य बताया गया है परन्तु संन्यासी को छुट दी गई है। स्वाध्याय एक ऐसा यज्ञ है, जिसे संन्यासी का भी नित्य का कर्म व धर्म माना गया है। स्वाध्याय को ऋषियों ने परम श्रम, परम तप और परम धर्म माना है।

स्वाध्याय का न करना अथवा स्वाध्याय के छुट जाने को ब्रह्मवेत्ता ऋषि याज्ञवल्क्य महा विनाश मानते हैं। ऋषि का यह कथन कितना सत्य है, प्रत्यक्ष प्रमाण हमारे सामने है। आज लगभग स्वाध्याय छुट ही गया है और हम सब महाविनाश के कगार पर ही खड़े हैं। अधिकांश लोग ईश्वर के संच्चे स्वरूप को नहीं समझ पा रहे हैं। परिणाम स्वरूप कितनी हानि हो रही है। बड़ी विडम्बना है कि ईश्वर के सच्चे स्वरूप को न समझ कर अपने मनमाने ईश्वर बना लेते हैं। वास्तविकता यह है कि सब विचार शील लोगों का आत्मा यह साक्षी देता है कि सृष्टि नियम विरुद्ध चमत्कार में विश्वास अज्ञानता और मूर्खता है. हमारी इस अज्ञानता व मूर्खता के लाभ से स्वार्थी बाबा और धूर्त लोग गुरुडम के सहारे अपनी आजीविका चलाते हैं. जनता को भयभीत करने का वातावरण बनाते हैं और यही धूर्त लोग भयभीत व्यक्ति का सब प्रकार से शोषण करते हैं, दोहन करते है. आज इन्हीं धूर्त एवं बाबा लोगों की भीड़ दूरदर्शन पर देखने को मिल रही है। स्वाध्याय न होने के कारण प्राय: व्यक्ति भयभीत रहता है। अज्ञानी बन कर दैववाद, जंत्री-मंत्री, गंडे-तावीज, जादू-टोना आदि

सब जो अवैदिक तन्त्र के उपकरण हैं उन में फंसते जा रहे हैं. अंधे के पीछे अंधे चल रहे हैं, दिशा विहीन हो कर दु:ख सागर के गर्त में गोते लगा रहे हैं, दूसरी ओर आज भेड़चाल का प्रचलन भी जोरों पर है, इस प्रसंग में एक रोचक कथा याद आ रही है, जो आज की शोचनीय अवस्था पर खरी उतरती है। एक सेवक ने संत की सेवा की और संत ने प्रसन्न हो कर सेवक को एक गधा उपहार रूप में दिया। गधे को ले कर सेवक अपने गाँव की ओर चल दिया. रास्ते में अकस्मात् गधा गिर पड़ा और मर गया। सेवक ने अपने सिर से सफेद साफा उतारा और गधे पर डाल दिया और वहीं मरे गधे के पास बैठ कर रोने लगा। एक यात्री गुजरा उसने चादर पर दो चार सिक्के डाल दिए। अब देखादेखी जो भी उस रास्ते से गुजरता सिक्के डालने लगा। सायंकाल सेवक ने देखा एक अच्छी-खासी राशि जमा हो गई थी। उसने सोचा आय का इस से बढिया साधन और कोई नहीं हो सकता. बस फिर क्या था, उसी स्थान पर गधे की समाधि बना दी और देखते ही देखते लोगों की भीड़ जुटने लगी। दूर-दूर तक प्रसिद्धि भी होने लगी। खबर संत के कानों तक पहुंची। मन में विचार आया कि चलो चल कर देखा जाए. आये तो झट से सेवक को पहचान लिया और सेवक उन्हें एकांत में ले गया और सारा घटना क्रम सुना दिया। सुन कर संत ने कहा-'बेटा इस में आश्चर्य की कोई बात नहीं है। जिस समाधि के पास मेरा डेरा है, वह इसी गधे की माँ की है। 'यह एक भयंकर रोग देश में ही नही अपितु विश्व व्यापी स्तर पर सक्रामक के रूप में फैलता ही जा रहा है। ऋषि दयानन्द सरस्वती जी ने इस महारोग का नाम दिया है, अविद्या और इस रोग की औषध बताई है-विद्या, विद्या अर्थात जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही मानना. विद्या का स्रोत्र हैं आर्ष ग्रन्थ।

स्वाध्याय ही जीवन की सफलता की कुंजी है. स्वाध्याय केवल आर्ष ग्रन्थों का ही किया जाता है, इसे अपने हृदय की गहराई तक उतारा जाता है। आज अधिकाँश लोग समाचार पत्र और निम्न स्तर की पत्रिकाओं के पढ़ने को स्वाध्याय मान लेते हैं। उन की यह धारणा ठीक नहीं है क्योंकि ऋषि व्यास जी ने जो स्वाध्याय की परिभाषा की है, उस पर यह खरी नहीं उतरती। ऋषि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ-प्रकाश में लिखते हैं कि स्वाध्याय केवल आर्ष ग्रन्थों का ही होता है। जिन ऋषि लोगों के ग्रन्थ हैं वे आज हमारे मध्य नहीं हैं। ग्रन्थों द्वारा हम उन का सान्निध्य पा सकते हैं. इसे यूँ भी कहा जाता है कि ऋषि लोग ग्रन्थों द्वारा अपने दर्शन देते हैं। अनार्ष ग्रन्थ कपोल कल्पित मिथ्या ग्रन्थ हैं। आर्ष ग्रन्थों में ऋषि लोगों ने सहजता से महान विषयों को अपने ग्रन्थों में प्रकाशित किया है। ऋषि लोगों का आशय, जहाँ तक हो सके वहां तक सुगम और जिस के ग्रहण में समय थोड़ा लगे, इस प्रकार का होता है। आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि एक गोता लगाना, बहुमूल्य मोतियों का पाना. वेद, उपवेद, वेदांग, ब्रह्म ग्रन्थ, उपांग, उपनिषद इत्यादि आर्ष ग्रन्थ हैं। ये सभी ग्रन्थ उच्च कोटि के ग्रन्थ हैं, चूँकि हमारी शिक्षा भौतिक विज्ञान से होने के कारण हम इन्हें बिना ऊच्च कोटि के विद्वान् के अध्ययन-अध्यापन के नहीं ग्रहण कर सकते. वर्तमान काल में ऋषि दयानन्द जी के अनेकों उपकारों में एक उपकार उन का ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश है। सत्यार्थ प्रकाश लगभग इन सभी आर्ष ग्रन्थों का निचोड़ है। अत: सत्यार्थ प्रकाश भी आर्ष ग्रन्थों की कोटि का ग्रन्थ है. मेरे कई बहन-भाई इस का भी स्वाध्याय करने में स्वयं को असमर्थ बताते हैं। कठिन कह कर छोड़ देते हैं. ऋषि दयानन्द जी भूमिका में ही लिखते हैं कि जो विद्या और धर्म प्राप्ति के कर्म हैं, प्रथम करने में विष के तुल्य और पश्चात् में अमृत के सक्श होते हैं। कठिन लगने का एक कारण यह भी है कि रूचि का न होना. जिस कार्य में रूचि होती है, वह कार्य सरल लगने लगता है. रूचि उत्पन्न करने के लिए निरंतर अभ्यास की आवश्यकता होती है. आरम्भ में केवल एक अथवा आधा ही पृष्ठ क्यों न पढ़े परन्तु अभ्यास प्रतिदिन का बनाएं तो कार्य सरल हो जाता है. प्रतिदिन थोड़ा ही सही पर स्वाध्याय करें अवश्य. एक बार अभ्यास बन जाये फिर तो लगने लगेगा कि इस में रस रस ही रस है और ऋषियों का संदेश भी यही है. चरैवेति-चरैवेति। - 786/8, करनाल-132001, मो. 09034566291

मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र

गतांक से आगे

-राजवीर सिंह आर्य, बहादुरगढ़

अपने लेख की पुष्टि करते हुए रामानुजन लिखता है कि सन् 1950 में कैमिली बुल्के जो रामायण का शोध विद्यार्थी था, उसने 300 रामायणों की गिनती की थी, जिसमें से स्वयं उसने इन कहानियों को चुना है। यहाँ वह अहिल्या जो ऋषि गौतम की पत्नी थी, उसके सम्बन्ध में भी अश्लील कविता व देवता इन्द्र द्वारा व्यभिचार का वर्णन करता है। अपनी लम्बी कविता में अहिल्या और इन्द्र का प्रेम प्रसंग का इस प्रकार वर्णन करता है जैसे आजकल की किसी फिल्म का दृश्य हो। आगे रामानुजन जैन रामायण के विषय में अर्थात् जैन मत की रामायण के विषय में क्या विचारधार है लिखते हुए बताता है कि हिन्दू विशेषतया हिन्दू ब्राह्मण रावण को अशुभ व खलनायक मानते हैं, वे रावण को मांसाहारी और रूधिरपान करने वाला बताते हैं। यह इसी तरह से झूठ है, जिसे तरह से हनुमान को बन्दर बताना और कुम्भकर्ण को गहरी नीन्द से जगाने के उपायों के समान झूठ है। जैन मत के मानने वाले लेखक रावण को असुर अर्थात् राक्षस नहीं मानते बल्कि उसकी प्रशंसा करते हैं और उसको अहिंसक मानते हैं। राम का नाम पद्म तथा रावण का वध भी लक्ष्मण द्वारा किया गया यह उनका मानना है। सीता को रावण की पुत्री और राम को ही जैन अपनी विकसित अवतरित आत्मा मानते हैं। लेकिन दूसरी तरफ रामानुजन लिखते हैं कि दक्षिण भारत में तेलगू और कन्नड़ भाषा में साहित्य मिलता है कि अपनी जवानी में रावण ने एक युवती से बलात्कार किया और उसी के गर्भ से सीता ने जन्म लिया जो उसके विनाश का कारण बनी। रामानुजन आगे लिखते है कि गौड्डा नाम के कवि तो लिखते हैं कि रावण के द्वारा शिव की अराधना करने पर प्रसन्न होकर एक आम का फल दिया और कहा कि इसे तुम और मन्दोदरी आधा-आधा खा लेना लेकिन रावण ने इसे स्वयं ही खा लिया और वह गर्भ से हो गया। तदउपरान्त उसकी नासिका से एक लड़की पैदा हुई जिसका नाम सीता रखा। रावण को ज्योतिषियों ने कहा कि इसे किसी डिब्बे में बन्द करके कहीं मिट्टी में दबा आओ। फिर रावण उसको ऐसा ही करके राजा जनक के खेत में दबा आया। सीता की उत्पत्ति सम्बन्धी तीसरा कारण एक और प्रचलित है कि तपस्या के द्वारा दशरथ को चावल की कटोरी प्राप्त हुई, उन्हीं चावलों में से एक कौवां कुछ चावल उठा कर ले गया और इसे मन्दोदरी को दे दिया।

जिसके खाने से मन्दोदरी गर्भवती हो गई और उसने एक लड़की को जन्म दिया। जिसके जन्म के समय ही भविष्यवाणी हुई कि यह लड़की रावण के विनाश का कारण बनेगी। रावण ने इस लड़की को समुद्र में फेंक दिया। जिसे समुन्द्र देवता ने उसे बालिका की रक्षा करते हुए इसे राजा जनक तक पहुंचाया और उसका नामकरण सीता किया। रामानुजन यह भी लिखते हैं कि बहुत से लेखकों का मानना है कि सर्वप्रथम एक बहुत बड़ा विशाल रामायण का ग्रंथ हनुमान ने एक पहाड़ के शिखर पर बैठ कर लिखा। जिसके कुछ अंश शिखर से उड़कर नीचे जा गिरे। जिन्हें इकट्ठा करके बाल्मीकि ने अपनी रचना की।

टिप्पणी:- प्रसिद्ध कहावत है कि एक झूठ को सौ बार कह दो वह सत्य हो जायेगी। इसी को आधार बनाकर रामानुजन यह बता रहा है कि रामायण एक काल्पनिक काव्य है। सीता की उत्पत्ति विषय, देवी अहिल्या, राम, लक्ष्मण आदि भाईयों हनुमान और रावण सम्बन्धी प्रमुख चरित्रों सम्बन्धी इतनी भ्रामक सामग्री इकट्ठी कर दी जिसका हर कोई यही तात्पर्य निकालेगा कि रामायण तो भिन्न-भिन्न कहानियों का एक मिला जुला उपन्यास मात्र है। जब इस तरह की भावना पैदा हो जायेगी कि रामायण हमारा ऐतिहासिक ग्रंथ नहीं है तो इसके महत्व को बताने वाले महर्षि बाल्मीकि आदि लेखकों की रचना की बात तो नकारखाने में तूती की आवाज के समान लगेगी। श्रीमान रामानुजन एक सोची समझी चाल के साथ हमारे प्राचीन ग्रंथ पर आक्रमण कर रहें हैं। इतने बड़े दुराग्रह से रामायण की खिचड़ी

बना दी है जिससे सत्य और असत्य का भेद करना या जानना बड़ा कठिन है। ये श्रीमान जिन 300 या तीन हजार रामायणों का जिक्र करते हैं वे सभी की सभी या तो रामचरित मानस या फिर पुराणों द्वारा प्राप्त करके अपने मनमाने ढंग से शब्दजाल का प्रयोग करके तरोड़-मरोड़ दीं गई हैं और इसे ही हम अपने देश व विदेश में लोग रामायण मानते हैं इसको लीला व नाटक बनाकर अपना मनोरंजन करते हैं। नास्तिकों का सबसे बड़ा अवगुण यही है कि जब वे सृष्टि-कृता परमपिता परमेश्वर को ही नहीं मानते तो हमारे महापुरुषों के अस्तित्व को कहाँ स्वीकारेंगे? इसीलिए इनसे देशप्रेम, चरित्र, पुनर्जन्म, कर्मोनुसार वर्ण व्यवस्था, वेद-ज्ञान, प्राचीन इतिहास, मोक्ष आदि सम्बन्धी विषयों को ठीक-ठीक मानने की अपेक्षा करना गलत होगा। किसी देश के स्कूल व विश्वविद्यालय उस देश की रीढ़ की हड्डी होते हैं। वहीं हमारे देश का सबसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय माना जाने वाला जे.एन.यु. जिसमें अप्रैल 2000 में एक मुशायरे का आयोजन किया गया। जिसमें पाकिस्तान से भी कुछ कलाकारों को बुलवाया गया। पाकिस्तानी कलाकारों द्वारा जब आपत्तिजनक कवितायें पढ़ी जा रही थी तो वहां पर उपस्थित सेना के अधिकारियों ने इस पर आपत्ति जाहिर की। परिणामस्वरूप उन दोनों अधिकारियों की विद्यार्थियों द्वारा धुनाई की गई। बात समाचार पत्रों, पुलिस तथा कोर्ट-कचहरी तक भी गई थी। इन संस्थाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थी राम, लक्ष्मण, भरत, हनुमान, सुग्रीव, नल-नील, जाम्बवान, सीता, अनुसईया, अहिल्या, माता शबरी व अन्य ऋषि मुनियों व महात्माओं के प्रति क्या श्रद्धा व कृतज्ञता रखते होंगे? इसी विश्वविद्यालय में स्कूल ऑफ सोशल साईस नाम का विभाग है। जहाँ से तथाकथित इतिहासकार पैदा होते है। प्रो. चिनॉय जो कि आई.एस.आई. जैसे आतंकवादी संगठनों की प्रशंसा तथा विदेश में भी जाकर देश के प्रति नफरत के भाव दिखाना जैसे कृत करता है। बड़ा दुर्भाय है कि यही प्रो. इस संस्थान का पाठ्यक्रम भी तैयार करता है। जो हमारे सबके लिए लज्जा की बात है। 1966 में रोमिता थापर ने एक हिस्ट्री ऑफ इंडिया में लिखा है कि राम एक काल्पनिक तथा गैर ऐतिहासिक व्यक्ति था। इन कम्युनिष्ट इतिहासकारों ने जिनमें बहुत से इसी विश्वविद्यालय से पढ़े अपने मनघडंत विचारों का साहित्य रचकर हमारी ऐतिहासिक धरोहर को मिटाने का कुप्रयास कर रहे हैं। इन इतिहासकारों को पहला झटका रामानन्द सागर जी द्वारा दिया गया जब रामायण को टी.वी. धारावाहिक के रूप में प्रत्येक रविवार को दिखाया जाने लगा। यद्यपि यह सीरियल रामचरित मानस पर आधारित था। लेकिन इसकी लोकप्रियता से कम्युनिस्ट इतिहासकारों को अपनी जमीन खिसकती दिखाई देने लगी। संयोग से 1999-2004 के दौरान अटल बिहारी वाजपेयी सरकार के समय में एन.सी.ई.आर.टी. के पाठ्यक्रम से बहुत सी आपत्तिजनक सामग्री भी निकाली गई। जिससे वामपंथी लेखक ही नहीं बलिक विदेशी लेखक भी उबल पड़े। इनको शर्मशार तो तब होना पड़ा जब 2010 में इलाहाबाद हाईकोर्ट के निर्णय ने राष्ट्रपुरूष राम की ऐतिहासिकता को स्वीकार किया। मुझे व्यक्तिगत रूप से रामानुजन, रोमिला थापर, पाऊला रिचमैन, प्रो. चिनॉय और प्रो. वेडी डोनियर आदि लेखकों के प्रति इतना रोष नहीं है क्योंकि इनकी लेखनी के पीछे हठ, दुराग्रह, स्वार्थ, प्राचीन संस्कृति को नष्ट करने, अज्ञान, लोभ आदि कारण स्पष्ट झलकते दिखाई देते हैं। लेकिन आश्चर्य तो तब होता है जब आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान व संन्यासी भी रामायण को लेकर अपनी अपुष्ट व अप्रमाणिक टिप्पणी करते हैं। एक प्रसिद्ध संन्यासी कहा करते कि राजा दशरथ तो नपुंसक था। राम आदि तो ऋंगी ऋषि की सन्तानें थी। जो नियोग द्वारा पैदा की गई थी। दूसरे प्रतिष्ठित संन्यासी क्रोध को लेकर लिखते हैं कि ऋषि विश्वामित्र व महर्षि वशिष्ठ की इतनी शत्रुता थी कि महर्षि विश्वामित्र तो एक दिन उनके प्राण हनन करने के लिए ही तैयार हो गये। जिस दिन वे वशिष्ठ को मार डालना चाहते थे उस दिन वे एक वृक्ष के ऊपर घात लगाकर बैठ गये, जहाँ से वशिष्ठ को गुजरना था। संयोग से वशिष्ठ के साथ एक अन्य व्यक्ति भी था और वे दोनों वार्तालाप करते हुए आ रहे थे। समीप आने पर विश्वामित्र ने वशिष्ठ के मुख से अपनी प्रशंसा सुनी तो उनका सारा क्रोध काफुर हो गया और उन्होंने वशिष्ठ से माफी मांगी। ये दोनों ही प्रसंग रामायण के अन्दर नहीं मिलते। वास्तव में सत्य क्या है, प्रमाण सहित जानिये:-

मेधावी तु ततोध्यात्वा स किंचिदिदमुत्तरम।

लब्ध संज्ञस्ततस्तं तु वेदज्ञो नृपमव्रवीत॥

सर्ग 8 श्लोक 5 बा. का.

इष्टिं तेऽहं करिष्यामि पुत्रायां पुत्र कारणात।
अर्थर्व शिरसि प्रोक्तैर्मंत्रैः सिद्धा विधानतः॥

बा.का. श्लोक 6

(इस प्रकार पुत्र प्राप्त की प्रार्थना सुनने के पश्चात बुद्धिमान वेदज्ञ ऋषि कुछ काल सोचविचार कर राजा दशरथ से बोले कि पुत्रेष्टि यज्ञ कराने पर आपके पुत्र उत्पन्न होंगे। हे राजन! पुत्रोत्पति के लिए अथर्ववेद में विधान की हुई पुत्रेष्टि यज्ञ हम करवायेंगे, क्योंकि वह विधि हमको सिद्ध है अर्थात् मैं उस विधि को भले प्रकार से जानने वाला हूँ) जब विश्वामित्र अपने यज्ञ के लिए राम को लेने आये, उस समय राजा दशरथ सहित जिनमें वशिष्ठ भी थे, बड़ी प्रसन्नतापूर्वक ऋषि का स्वागत किया। यही नहीं विश्वामित्र ने भी वशिष्ठ मुनि से मिलकर बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की देखिए।

वशिष्ठ च समागम्य कुशलं मुनिपुंगवः।
ऋषि श्रृतान्यथान्याय महाभाग उवाच है॥

सर्ग 8-37 बा.का.

(यहाँ विश्वामित्र वशिष्ठ मुनि को प्राप्त होकर कुशल पूछा और वामदेव जो अन्य ऋषि खड़े थे उनमे भी यथाक्रम कुशलता पूछते हुए मिले) यह श्लोक सिद्ध करता है कि उन दोनों में शत्रुता नहीं थी और भी कई श्लोक हैं जो सिद्ध करते हैं कि वे एक दूसरे के प्रति सम्मान का भाव रखते थे। इस सम्बन्ध में हम इतना ही कहेंगे कि काम, क्रोध, मद लोभ, मोह व अहंकार ऋषियों में नहीं होता। - क्रमशः

(पृष्ठ 11 का शेष)

जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति में काम की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है। यह भौतिक जीवन के संचालन का आधार है। भारतीय संस्कृति में योग और भोग के जीवन में समन्वय किया है। इन दोनों धाराओं को मर्यादित संयमित धर्मानुसार उपयोग व उपभोग करते हुए जीवन के लक्ष्य की ओर अग्रसर होना चाहिए।

मोक्ष- ऋषियों का निश्चित मत है कि समस्त दुःखों से छूटकर पूर्णानन्द को प्राप्त करना ही मानव जीवन का चरम लक्ष्य है। इस बात को सांख्य शास्त्र के प्रणेता कपिल ने इन शब्दों में कहा है-

अथ त्रिविधदुःखात्यन्त निवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः।

(सांख्य 1.1)

आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक, इन तीन प्रकार के दुःखों की अत्यन्त पूर्ण निवृति कर देना अत्यन्त पुरुषार्थ है। क्योंकि-

विवेकानिःशेष दुःखनिवृत्तौ कृतकृत्यो नेतरान्नेतरात्

(सांख्य 3.74)

विवेक से समस्त दुःखों के हट जाने पर ही पुरुष कृतकृत्य होता है, अन्य किसी भी तरह से नहीं।

दुःखो से छूटने का उपाय मोक्ष प्राप्ति के अतिरिक्त और कोई नहीं है। अतः मनुष्य जीवन का मुख्य उद्देश्य मोक्षप्राप्ति अथवा आनन्द की प्राप्ति है। मोक्ष का अर्थ है मुक्ति। दुःखों से मुक्ति ही मोक्ष है। मोक्ष पुरुषार्थ चतुष्टय में अन्तिम पुरुषार्थ है। धर्म, अर्थ, काम भौतिक है तो मोक्ष आध्यात्मिक है। हलायुध कोश में वर्णित है कि सभी आशाओं का विनाश ही मोक्ष है-

न मोक्ष नभसः पृष्ठे न पाताले न भू तले।
सर्वाशासंक्षये चेतः क्षयो मोक्ष इति श्रुतेः॥

सांख्यकारिका में उल्लिखित है-

प्राप्त शरीरभेदे चरितार्थत्वात् प्रधानविनिवृत्तौ।
एकान्तिकमात्यन्तिकमुभयं कैवल्यमाप्नोति॥

अर्थात् शरीर अन्त के समय, समस्त प्रयोजनों के सिद्ध हो जाने पर तथा प्रकृति की निवृत्ति हो जाने पर तथा प्रकृति की निवृत्ति हो जाने पर तत्त्वज्ञ पुरुष को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

श्रीमद् भगवद् गीता में मोक्ष के लिए ब्रह्मनिर्वाण शब्द का प्रयोग हुआ है।

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः॥

त्रिवर्ग के पारस्परिक सम्बन्ध का निष्कर्ष है-मोक्ष। अर्थ का मूल धर्म तथा अर्थ का फल है काम। अर्थ का वृक्ष धर्म के बीच से उत्पन्न होता है तथा काम फल फलता है। इस त्रिवर्ग का मूल है निवृति जिसे मोक्ष कहा जाता है। यह तथ्य महाभारत में वर्णित है-

धर्ममूलः सदैवार्थः कामोऽर्थफलमुच्यते।
मूलमेतत् त्रिवर्गस्य निवृत्तिर्मोख उच्यते॥

योगेश्वर कृष्णः वंश, स्थान और समय

- मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति

भारत में ययाति नाम के एक बहुत पुराने राजा हुए है। शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी उनकी पत्नी थी। उससे उनके दो पुत्र हुए यदु और तुर्वसु युद का वंश जिसमें श्रीकृष्ण हुए, यादव वंश कहलाता है। इसी वंश के एक राजा हुए मधु उनक संतान माधव कहलाई। मधु के एक वंशज सात्वत हुए। उनसे पीछे उसी कुल का नाम, जिसे उनसे पूर्व यादव, माधव और सात्वत एक ही वंश के तीन भिन्न-भिन्न नाम हैं। सात्वत के पुत्रों में से अंधक और वृष्णि की संतान वृशि या वार्ष्णेय कहलाई। अंधक का एक और नाम महाभोज था। इससे उनके वंश का नाम भोज हुआ। अंधक के दो पुत्र हुए कुकुर और भजमान। कुकुर की संतति का नाम भी कुकुर पड़ा और भजमान की संतित भजमान के पिता अंध क के नाम से अंधक ही कहलाती रही। इस प्रकार यादव वंश के दो उपवंश हो गए। एक वृष्णि, दूसरे भोज। भोजों के फिर दो भेद हुए-एक कुकुर दूसरे अंक।

श्रीकृष्ण वृष्णियों से था। इनके दादा का नाम था शूर। शूर का बड़ा लड़का वसुदेव था। वसुदेव के कई लड़के और लड़कियां हुई। इन्हीं में हमारे चरित्र नायक श्रीकृष्ण विशेष उल्लेखनीय है।

श्रीकृष्ण की मां का नाम देवकी था। वे कुकुर जाति की थी। यादवकुल का राज्य उस समय कुकुरों के हाथ में था। देवकी के पिता थे देवका जिनका भाई उग्रसेन राज्य का अधिकारी था। उग्रसेन को उसके पुत्र कंस ने सिंहासन से उतारकर स्वयं राज्य संभाल लिया था। स्मरण रहे, यादवों के केवल दो मुख्य कुलों का वर्णन ऊपर कियागया है क्योंकि इन वंशों का प्रस्तुत चरित्र से विशेष संबंध है। वस्तुतः इन वंशों की संख्या 96 थी और इन कुलों में 18000 पुरुष थे।

यादवों की राजधानी मथुरा थी। जरासंघ के निरन्तर आक्रमण से तंग आकर श्रीकृष्ण की सलाह से इन्होंने मथुरा छोड़ दी और समुद्र के किनारे पश्चिम में जा डेरा किया। यदि मथुरा में आम्रकुंजों की बहार थी तो द्वारिका में भी चारों ओर हरियाली ही हरियाली नजर आती थी। रैवतक पहाड़ ने जिसे आजकल गिरनार कहते है, द्वारिका की शोभा बढ़ा रखी थी। प्रकृति की गोद में पले सौन्दर्य श्रीकृष्ण कहते हैं-'यह सोचकर हम सब पश्चिम दिशा में सुन्दर कुशस्थली में, जिसे रैवत पर्वत ने और भी रमणीय बना दिया है, जो बसों (सभा पर्व 14.58,56) संप्रति द्वारिका का बहुत ही महत्व है। यह पश्चिम का महत्वपूर्ण द्वार है।

वृष्णियों के घरेलू व्यवहार का वर्णन महाभारत में इस प्रकार किया है-'वृद्धों की आज्ञा में चलते है। अपने भाई बंधों का अपमान नहीं करते। ब्राह्मणों, गुरु और सजातीय के धन के प्रति अहिंसा वृत्ति रखते हैं। धनवान होकर भी अभिमानरहित हैं। ब्रह्म के उपासक और सत्यवादी हैं। समर्थो का मान करते हैं और दीनों को सहायता देते हैं। सदा देवोपासना में रत, संयमी और दानशील रहते हैं। डींगे नहीं मारते। इसीलिए वृष्णिवीरों का राज्य नष्ट नहीं होता। (द्रोण पर्व 24.28)

यादवों की राज्य शैली संघ के ढंग की थी। ये किसी राजा की आज्ञा पर न चलते थे, किन्तु सभी का राज्य के निर्णयों में मत होता था। उनका राष्ट्रस्वतन्त्र था। किसी के दबाए दब न सकता था। इस वीर जाति का प्रत्येक व्यक्ति भी अपनी वैयक्तिक स्वतन्त्रता छोड़ने को सहसा तैयार न था। इससे संघ के नाय को को कष्ट अवश्य होता था पर क्षत्रियों की आन को धब्बा न लगता था। इस आन का सबसे उज्जवल आदर्श यह था कि जो श्री कृष्ण के लड़के प्रद्युम्न ने सौम्य नगर (वर्तमान अलवर राजस्थान) के राजा शाल्व से लड़ाई में अपने सारथि दारक से कहा था-'वह वृष्णिकुल में नहीं पैदा हुआ, जो रण में पीट दिखाए। या जो गिरे हुए पर आक्रमण करे या जो स्त्री बच्चे अथवा बूढ़े पर प्रहार करे। अथवा रथ से विहीन, गिर गए या उस पर जिसका शस्त्र टूट गया है, प्रहार करे। यह युद्ध का नियम था, अनुशासन था। ऐसे कुल और ऐसे स्थान को हमारे चरित्र नायक ने अपने देवोपम जन्म से सुशोभित किया। उनके जन्म का समय हमारी परम्परागत काल गणना के अनुसार आज से प्रायः 5000 वर्ष पूर्व निश्चित किया है।

यूनानी यात्री मैगस्थनीज ने मथुरा का वर्णन करते हुए लिखा है-'यहां शौरसैनी लोग रहते हैं और वे हीराक्लीज की पूजा करते हैं। ये हीराक्लीज स्पष्टताया श्रीकृष्ण ही हैं। इनके समय के संबंध में यवन यात्री उस समय के साक्षियों के आधार पर आगे लिखता है कि वे डायोनीसियस से 15 पीढ़ियां पीछे हुए। डायेनीसियम से चन्द्रगुप्त तक-जिसके वहां वह दूत

बनकर आया था उसके कथनानुसार 143 पीढ़ियों अंतर है। अर्थात् श्रीकृष्ण चन्द्रगुप्त से 153-15=138 पीढ़ियां पूर्व हुए। ऐतिहासिक की प्रथा का अनुसरण करते हुए प्रत्येक पीढ़ी को बीस वर्ष का समय दे दिया जाए तो यह अंतर 138 गुणा 20=2760 वर्ष निश्चित होता है। यह हुआ श्रीकृष्ण से चन्द्रगुप्त तक का समय। चन्द्रगुप्त ईसा से 392 वर्ष पूर्व हुआ था, और अब ईसवी सन् 2006 है, इस प्रकार श्रीकृष्ण को हुए आज तक 2760+392+2006=5098 वर्ष हुए हैं। इससे प्रतीत होता है कि उक्त परम्परागत गणना आज ही की चलाई हुई नहीं किन्तु चन्द्रगुप्त के समय अर्थात् आज से प्राय: अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व भी यही गणना प्रचलित थी। संभव है उस समय इस गणना की कुछ और भी ऐतिहासिक साक्षियां रही हों जो आज उपलब्ध नहीं होती है।

महाभारत के इस काल में साक्षियां और भी दी जाती हैं। यथा-9 शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि-कृत्तिका स्वादधीत एता ह वै प्राच्यै न च्यवर्त सर्वाणि ह वा अन्यानि नक्षत्राणि प्राच्यै दिशश्च्यवन्ते। अर्थात् कृत्तिका नक्षत्र में अग्नि आ आधान करे। यह नक्षत्र पूर्व दिशा से च्युत नहीं होता, अन्य नक्षत्र होते रहते हैं। कृत्तिका नक्षत्र की आज वह स्थिति नहीं। आज की स्थिति से ऊपर कही स्थिति को ज्योतिष के नियमानुसार तुलना करने से दीक्षित महाशय ने पता लगाया है कि शतपथ की ऊपर की उक्ति का समय 300 वर्ष ईसा से पूर्व है। छान्दोय उपनिषद् शतपथ का समकालीन है और उसमें कृष्ण देवकी पुत्र के घोर अगिरस से शिक्षा पाने का उल्लेख है। यदि वे कृष्ण वही महाभारत के कृष्ण हों तो इनका समय ईसा से 3000 वर्ष पूर्व होगा, अर्थात् आज से लगभग 5000 वर्ष पूर्व।

2. राजतरंगिणीकार कल्हण ने बाराहमिहिर का यह कथन उद्धृत किया है-'षडद्विक पंचद्वियुत: शक कालस्तस्य राज्ञश्च।' अर्थात युधिष्ठिर का समय शक कालमें 2526 वर्ष मिलाने से निकलता है। शक काल ईस्वी संवत् से 2526 वर्ष मिलाने से निकलता है। शक काल ईस्वी संवत् से 78 वर्ष पीछे हुआ। इस गणना से महाभारत का समय 2528-78=2448 वर्ष ईसा से पूर्व निकलेगा। यह उस समय जबकि कुरु पाण्डवों का समय कलियुग के आरम्भ से 653 वर्ष पीछे मानें। परन्तु स्वयं कल्हण का कथन है कि मुझसे पूर्व के इतिहास युधिष्ठिर का समय द्वापर के अन्त में अर्थात् कल्हण की मानी तिथि से 653 से अधिक वर्ष पूर्व मानते आए है। दूसरे शब्दों में यह समय ईसा से 3909 या मोटे शब्दों में 3000 वर्ष पूर्व हुआ। (राजतरंगिणी 9-46)

ऊपर दी गई साक्षियों का संयुक्त संकेत एक ही है। वह यह कि हमारी प्रचलित कालगणना का आधार वास्तविक है। यदि इस विषय में महाभारत की अन्त:साक्षी प्राप्त हो जाए तो वह इस समस्या की निर्णायक होगी। भीष्म की मृत्यु के समय तारों की स्थिति इस प्रकार कही गई है- **प्रवृत्तमात्रे त्वयनमुत्तरेण दिवाकरे।**

शुक्लपक्षस्य चाष्ट्म्यां माघमासस्य पार्थिव।
प्राजापत्ये च क्षत्रे मध्यं प्राप्त दिवाकरे।
समावेश यादात्मानतात्मन्येव समाहित:।।

शांति पर्व 46.3.4

अर्थात् सूर्य के उत्तरायण आते ही शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन दोपहर को प्रजापत्य रोहिणी नक्षत्र में-

श्रीयुत नारायण शस्त्रियर ने अपनी अंग्रेजी पुस्तक 'द एज ऑफ शंकर' में इस तिथि का पूर्व कथित श्रीकृष्ण के हस्तिनापुर प्रस्थापन तथा महाभारत के आरम्भ आदि की तिथियों में मिलान कर इस कथन की यथार्थता को प्रमाणित किया है और ज्योतिष की गणनाओं से सिद्ध किया है कि नक्षत्रों की यह स्थिति 3013 ई. पूर्व में हो सकती थी। यदि यह गणना ठीक हो तो श्रीकृष्ण का काल निश्चित है। इस प्रकार श्रीकृष्ण हमारे राष्ट्रीय महापुरुष हैं।

शक्ति की सीमा

श्रीकृष्ण ने जब शिशुपाल का बध किया तो अर्जुन ने साश्चर्य पूछा-देव जैसे आज निभिष मात्र में इस दुष्ट को मृत्यु दंड का पात्र मान लिया वैसे भूतकाल में भी आप उसे किसी भी अपराध में मार सकते थे। वह तो सदैव आपका अपमान करता आया है। श्रीकृष्ण ने आमस्थ गाम्भीर्य के साथ उत्तर दिया-''धनन्जय मैं तुम्हारे तर्क को मानता हूँ। यह भी स्वीकार करता हूं कि आज की तरह कभी भी मैं उसका संहार कर सकता था किन्तु मेरे सम्मुख सदैव एक प्रश्न रहा है कि क्या बल का धर्म सदैव दण्ड का ही है। क्षमा या सहन करने का नहीं? क्षमा बलवान ही कर सकता है। दुर्बल क्या क्षमा करेगा? सहन भी वही करेगा, जिसके पास सहनशक्ति होगी। अशक्त क्या सहन करेगा? परंतप, मैं अब तक अपनी इस शक्तियों की परीक्षा कर रहा था। मैं अपनी ही थाह ले रहा था कि मुझमें जो शक्ति है, वह कितनी मेरी है, क्योंकि शक्ति उतनी ही हमारी होती है, जिस पर हमारा, हमारे संकल्प का अंकुश रह सकता है।

-प्रस्तुति सत्यानन्द आर्य

पत्नी घर का खजाना और पतिकुल की रक्षिका है

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और वेदों को स्वयं पढ़ना व दूसरों को पढ़ाना सब श्रेष्ठ मनुष्यों का परम धर्म है। यह घोषणा महाभारत काल के बाद वेदों के अपूर्व विद्वान महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सप्रमाण की है। वेदों का अध्ययन करने पर इसमें सर्वत्र जीवनोपयोगी बहुमूल्य ज्ञान व प्रेरक विचार प्राप्त होते हैं। महर्षि दयानन्द जी ने गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली का समर्थन किया था और इसके लिए उन्होंने विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। स्वामी दयानन्द जी के अनुयायियों ने उनकी शिक्षाओं के अनुसार गुरूकुल कांगड़ी खोला और इसका अनुकरण कर बाद में बड़ी संख्या में गुरुकुल खोले गये जहां आर्ष संस्कृत व्याकरण सहित प्राचीन वैदिक शास्त्रों व ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता है। गुरूकुल कांगड़ी ने देश व समाज के अनेक वेदों के उच्च कोटि के विद्वान दिये जिन्होंने अपनी प्रतिभा से वेदभाष्य सहित बड़ी संख्या में वैदिक ग्रंन्थों का प्रणयन किया जिनमें उत्तम कोटि की ज्ञान सामग्री है जिससे हम लाभान्वित हुए हैं या अपने जीवन को और उन्नत कर सकते हैं। इस प्रस्तुत लेख में हम वेद के दो मन्त्रों के आधार पर गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के स्नातक वेदोपाध्याय अथर्ववेद-सामवेद भाष्यकार और अनेक वैदिक ग्रंन्थों के लेखक पं-विश्वनाथ विद्यालंकार जी के लेखों पर आधारित नारी जाति से सम्बन्धित प्रेरक व उच्चता के विचारों को प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस लेख में प्रस्तुत दोनों वेद मन्त्र अथर्ववेद के हैं। पहले मन्त्र का शीर्षक **'पत्नी घर का खजाना है'** और दूसरे मन्त्र का **'पत्नी पतिकुल की रक्षिका है।'** पहला मन्त्र है-'**असितस्य ते ब्रह्मणा कश्यपस्य गयस्व च। अन्तःकौशमिव जामयोऽखपि नह्यामि ते भगम्॥** (अथर्ववेद 1/14/4) इस मन्त्र में जो शब्द आये हैं वह हैं-असितस्य कश्यपस्य गयस्य च ब्रह्मणा ते भगम् अपि नह्यामि जामयः अन्तः कोशमिव। असित शब्द से मन्त्र में बताया गया है कि परमात्मा बन्धन-रहित है। वह कश्यप है अर्थात् सर्वद्रष्टा है। वह गय है अर्थात् वह सर्वाधार है और प्राणस्वरूप है। ब्रह्म अर्थात् ''वेद इस परमात्मा का ज्ञान है। यह वर्णन करने के पश्चात पति अपनी पत्नी से कहता है कि परमात्मा के दिये वेद द्वारा मैं तुझ में हे पत्नी! सौभाग्यों (ऐश्वर्य धर्म, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य) को स्थापित करता हूं। तू वेदों को पढ़ा कर और इस विधि से सौभाग्यों को प्राप्त किया कर। वेदाध्ययन से प्राप्त होने वाले सौभाग्य को मनुष्य जीवन का खजाना भी कह सकते हैं। पति कहता है कि तू खजाने की तरह है। खजाने में जैसे उत्तम-उत्तम रत्नों को स्थापित किया जाता है वैसे ही तुझ में मैं वेद के सौभाग्य-रत्नों को स्थापित करता हूं ताकि तू **अन्तः कोष** की तरह बन जाए घर के अन्दर पड़े खजाने की तरह बन जा। खजाना घर के अन्दर रखा जाता है और उस खजाने में बहुमूल्य रत्न आदि रखे जाते हैं। इसी प्रकार का तू खजाना बन और तुझ में वैदिक सौभाग्य-रत्न विद्यमान रहें। प्रत्येक पत्नी को ''अन्तः कोष की तरह बनना चाहिये। इस के लिए उसे दैनिक स्वाध्याय करना चाहिये दैनिक वेद-पाठ करना चाहिए। ताकि वेद के रत्नों को यह प्राप्त कर सके। इस मन्त्र में सृष्टिकर्त्ता और वेदज्ञानदाता परमात्मा ने मनुष्यों को शिक्षा दी है कि वेदों का पढ़ना सौभाग्य को प्राप्त करना है। वेद विद्या का पर्याय है। शास्त्र कहते हैं कि संसार में ज्ञान से बढ़कर कुछ भी नहीं है। गायत्री मन्त्र ईश्वर से बुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना के कारण ही वेदों का एक श्रेष्ठ मन्त्र है जिसकी तुलना में संसार के धर्म ग्रन्थों इसके समान उत्तम विचार नहीं है। प्राचीन काल और वर्तमान काल में बहुत कुछ बदला है परन्तु ज्ञान की महत्ता प्राचीन काल में भी थी और आज भी है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। अतः सभी को वेदों का नित्यप्रति स्वाध्याय करना चाहिये। यह इस वेद की मुख्य शिक्षा मुख्यतः पत्नी के लिए है, और प्रकारान्तर से सभी मनुष्यों के लिए भी है, जिससे वह अपनी सन्तानों को भी वेदज्ञान से

सम्पन्न कर सके। आईये इस वेदमन्त्र में प्रयुक्त प्रत्येक पद वा शब्दों के अर्थ भी जान लेते हैं-(असितस्य) बन्धन-रहित, (कश्यपस्य) सर्वद्रष्टा तथा गयस्य च सर्वाधार या प्राणस्वरूप परमात्मा के (ब्रह्मणा) वेद-ज्ञान के द्वारा (ते) तुझ में (भगम्) भगों को (अपि नह्यामि) मैं बान्धता हूँ। (अन्तः कोशमिव) अन्दर के खजाने की न्याई हैं।

दूसरा मन्त्र है **एषा ते कुलपा राजन् तामु ते परि दद्मसि। ज्योक् पितृष्वासाता आ शीर्ष्णः शमोप्यात्।।' (अथर्ववेद 1/14/3)**। इस मन्त्र में जो शब्द आये हैं वह हैं-राजन् एषा ते कुलपा ताम् उ ते परि दद्मसि ज्योक् पितृषु आसाते आ शीर्ष्णः शमोप्यात्। मन्त्र में ईश्वर ने शिक्षा दी है किगृहस्थ-जीवन में पति राजा है और पत्नी इस कुल की पालना करने वाली राणी है। पत्नी को कुलघ्नी न कह कर "कुलपा" कहा गया है। इस शब्द द्वारा पत्नी का मान बढ़ाया गया है, तथा साथ ही पतिकुल में आकर उस का क्या कर्तव्य होना चाहिये, इस को भी सूचना दी गई है। बिना पत्नी के पतिकुल की रक्षा तथा पालना नहीं हो सकती। साथ ही पत्नी को यह समझना चाहिये कि वह पतिकुल में आकर पतिकुल की रक्षा तथा पालना का बोझ अपने ऊपर लेती है।

पतिकुल के पितरों में रहना उनका साथ निभाना तथा उनकी सेवा-शूश्रूषा करना-नववधू का कर्तव्य है। नियत काल तकगृहस्थ-जीवन व्यतीत कर यदि पत्नी वानप्रस्थ आदि आश्रमों में जाना चाहें तो यह अधिकार भी उसे प्राप्त है। पतिकुल में रहती हुई पत्नी अपने सिर से इस कुलभूमि में शान्ति के बीज बोया करे। सिर से अभिप्राय विचारशक्ति का है। पत्नी अपनी विचारशक्ति से इस कुलभूमि में शान्ति, प्रेम, अनुराग, उदारता धर्म आदि सदगुणें के बीज बोए, ताकि ये बीज महावृक्ष होकर गृहस्थ को अपनी छाया द्वारा सुखी रखें।

पाठको की सुविधार्थ मन्त्र के शब्द और उनके हिन्दी अर्थ व भाव भी प्रस्तुत हैं। मन्त्रर्थ:- (राजन्) हे पति राजा! (एषा) यह कन्या (ते) तेरे (कुलपा) कुल की पालना करने वाली है, (ताम् उ) उसको (ते) तेरे लिए (परि दद्मसि) हम पूर्णरूप से देते हैं। (ज्योक्) बहुत देर तक (पितृषु) पतिकुल के बुजुर्गों में (आसाते) यह बनी रहे, (आ+शीर्ष्णः) और अपनी विचारशक्ति से (शमोप्यात्) शान्ति के बीज बोए।

वेदों में हमें नारी जाति के विषय में बहुत ही सम्मानजनक एवं प्रशंसाप्रद वचन पढ़ने को मिलते जो वर्तमान में प्रचलित किसी भी मत-सम्प्रदाय के ग्रंन्थों में उपलब्ध नहीं होते जबकि यह विगत 500 से 4000 वर्ष पूर्व अस्तित्व में आये हैं। यह ज्ञान के ह्रास का उदाहरण है न कि विकासवाद का। अतः यहां विकासवाद असफल रहा है। हमें मध्यकाल व बाद से यह पढ़ने व सुनने को मिलता है कि **स्त्री शूद्रो नाधीयताम्** अर्थात् स्त्री व शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं, नारी नरक का द्वार है, स्त्री और शूद्र यदि वेद पढ़ें तो उनकी जिह्वा काट दी जाये या कानों में रांगा पिघाल कर डाल दिया जाये, लम्बे समय तक स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखा गया, हमारे ही देश में बाल विवाह प्रचलित हुए जिससे न केवल नारी जाति का अपमान हुआ अपितु इन पर एक प्रकार से अकथनीय अत्याचार भी हुए। यही स्थिति विदेशों में उत्पन्न सभी मत-मतान्तरों की हैं। इसके विपरीत वेदों के आधार पर हम रामायण में माता सीता कौशल्या कैकेयी व सुमित्र आदि का जीवन देखते हैं और अन्य सभी महाभारत मनुस्मृति व उपनिषदादि प्राचीन ग्रन्थों में ऋषिकाओं आदि के बारे में पढ़ते हैं तो हमें वैदिक संस्कृति का गौरव विदित होता है। मनुस्मृति में यह पढ़कर तो हम ऋषियों के प्रति नतमस्तक व भाव विभोर हो जाते जब वह घोषणा करते हैं कि जिस देश व समाज में नारी का सम्मान होता है वहां देवता निवास करते हैं और जहां नहीं होता वहां के सभी कार्य व क्रियायें किलता को प्राप्त होते हैं। अतः हमने उक्त दो वेदमन्त्रों को एक बागी के रूप में प्रस्तुत किया है जिससे कि पाठक वेदों के अध्ययन में प्रवृत्त होकर मनुष्य जीवन के उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष लाभ उठा सकें। हम आशा करते हैं कि पाठकों को यह लेख पसन्द आयेगा जिससे हमारा परिश्रम सार्थक होगा।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001
फोन: 09412985121

सामाजिक क्रान्ति के लिए ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ें। **-विक्रमदेव शास्त्री**

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
48. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
49. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
50. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
51. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
52. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
53. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
54. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
55. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
56. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
57. यज्ञ समिति झज्जर
58. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
59. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
60. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
61. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
62. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
63. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
64. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
65. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
66. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
67. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
68. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
69. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
70. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी.एल.एफ-2, गुड़गांव
71. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
72. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
73. श्री रवि कुमार जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़

धूम्रपान व तम्बाकू

- चांद सिंह आर्य

आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि बीड़ी-सिगरेट, हुक्का, गुटका, जर्दा व तम्बाकूप्रमियों के लिए एक बम्पर इनामी प्रतियोगिता होने जा रही है जिसमें सफल विजेताओ को इनाम दिए जाएंगे। आप भी अपना भविष्य आजमाएं।

पहला इनाम - दिल का दौरा, फेफड़ों का कैंसर
दूसरा इनाम - (रंगीन) टी.बी. (तपेदिक) या दमा।
तीसरा इनाम - ब्लड-प्रेशर (उच्च-रक्तचाप) खांसी या श्वास के रोग।

इनके अतिरिक्त सहानुभूति पुरस्कार भी जिए जायेंगे जैसे-मैले दांत, बदबूदार सांस, मसूड़ों की सूजन, काले होठ, हार्ट अटैक, आँखों में कमजोरी, आंतों में खुश्की, जिगर की खराबी, अनिद्रा, बेचैनी, कब्ज, पाचन-स्वाद-स्वर-स्मरणशक्ति आदि तन्त्रों की कमजोरी, चिड़चिड़ापन, उत्तेजना, क्रोध, रोग-प्रतिरोधक क्षमता का ह्रास, गर्भस्थ शिशु पर बुरा प्रभाव व सहनशक्ति का नष्ट होना इत्यादि। साथ-साथ कुछ नकद पुरस्कारों की भी व्यवस्था की गई है, जैसे–थूक चाटना, भीख मांगना, चोरी करना, झूठ बोलना, कपड़े व खेत खलिहान जलाना, ब्रह्मचर्य को नष्ट करना और अन्तिम पुरस्कार घुट-घुटकर मरना आदि।

कृपया परिणाम देखने के लिए जल्दी से जल्दी अपनी छाती का रंगीन एक्सरा करवाएं या अपने नजदीकी डाक्टर से सम्पर्क करें।

ध्यान दें–**डा. झवेरी** (इंग्लैण्ड) व कैंसर रोगविशेषज्ञ **डा. आर.के. अग्रवाल** गम्भीर चेतावनी देते हैं–"Every cigaratte costs 18 minutes of life. Smoking causes lung-cancer as tobacco contains Nicotin poison."

प्रत्येक सिग्रेट आयु की कीमती 18 मिनट खा जाती है। धूम्रपान फेफड़ों के कैंसर का कारण बनता है क्योंकि इसमें निकोटिन नामक जहर पाया जाता है।

आज की मौज-कल की मौत। तम्बाकू से छुट्टी-रोगों से मुक्ति।

नशा नाश का द्वार-व्यसन विनाश का द्वार।

प्रश्न-क्या आप एक सभ्य एवं स्वतन्त्र नागरिक हैं?

यदि हाँ तो फिर यह धुआँ क्यों पी रहे हो? धूम्रपान तो असभ्यता व दासता की निशानी है। कहने को हम सभ्य व स्वतन्त्र हो गये हैं किन्तु क्या हम सभ्य व स्वतन्त्र हैं? जब तक अण्डा-मांस, शराब, तम्बाकू, पान मसाला, गुटका-जर्दा आदि व्यसनों में फंसे हुए हैं तब तक हमें कौन चरित्रवान्, सभ्य और स्वतन्त्र कह सकता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह स्वयं और देश के बालकों को भी इन विनाशकारी भयंकर दुर्व्यसनों से बचाए।

इसे बुद्धिहीनता के अतिरिक्त और क्या माना जाए कि तम्बाकू में एक भी गुण न होते हुए भी मनुष्य इसका सेवन करता है। परन्तु याद रखो इससे नुकसान केवल पीनेवालों को ही नहीं बल्कि न पीनेवालों को भी हो रहा है। जो व्यक्ति बिल्कुल धूम्रपान नहीं करता उसे अप्रत्यक्षरूप से एक वर्ष में लगभग 80 सिगरेट धुएं का सेवन करना पड़ता है। **धूम्रपान करे कोई-बेवजह मरे कोई** वाली कहावत सत्य सिद्ध होती है। इसलिए धूम्रपान न करने वालों को भी सोचना होगा और अपने आपको व अपने भाई-बहनों को इस भयंकर विष से बचाना होगा। अतः **मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम व योगिराज श्रीकृष्ण** की सन्तानों अपने गौरव को पहचानो और आज से ही, बस अभी से ही भगवान् को साक्षी करके प्रतिज्ञा करो कि मैं आजीवन शराब, अण्डे-मांस, तम्बाकू, पान-मसाला व धूम्रपान आदि भयंकर बुराइयों को किसी भी अवस्था में सेवन करना तो दूर, छुऊँगा भी नहीं। शाबाश! वीर शाबाश! दृढ़ संकल्प करो, हिम्मत रखो। निकालो जेब से बीड़ियाँ, सोचते क्या हो? निकालो और तोड़कर फेंक दो खिड़की से बाहर। क्या सोच रहे हो? थूक दो इस डाकिन पर। धीरे-धीरे छोडूँगा। ना भैया ना, ये सब मन के नखरे हैं। सावधान! इस मन की चालों में नहीं आना। दृढ़ संकल्प करो। फिर इसकी क्या हिम्मत है जो यह तुम्हारे होठों तक पहुंच सके?

'संसार में असम्भव कुछ भी नहीं है। असम्भव शब्द मूर्खों के शब्दकोश में होता है।' **-नेपोलियन**

'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य

उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।' -**महर्षि दयानन्द सरस्वती**

डा. टी.एल. का कथन है 'तम्बाकू चाहे खाओ-पीओ-चबाओ, सूंघो या किसी भी रीति से उसका उपोग करो पर उसमें जरा भी पोषण गुण नहीं किन्तु यह तीव्र विष है जो खून में मिलकर अकाल मृत्यु तथा कमजोरी के सिवाय और कुछ नहीं देता।'

संसार में सभी महापुरुषों ने धूम्रपान का निषेध किया है मनुष्य के अतिरिक्त कोई भी जीव धूम्रपान नहीं करता। सभी मत-पन्थ व धर्मग्रन्थ तम्बाकू आदि नशीले पदार्थों का सेवन बुरा मानते हैं।

धूम्रपान मनुष्य को धीमी मौत मारता है।

क्योंकि इसमें निकोटिन के अतिरिक्त कार्बनमोनोक्साईड, मार्शगैस, अमोनिया, कोलोडीन, कार्बोलिक एसिड आदि 25 प्रकार के प्राणघातक विष पाये जाते हैं।

एक बीड़ी-सिगरेट पीने से 1 से 5 मि.ग्राम तक निकोटिन विष खून में मिल जाता है जो इतना भयंकर होता है कि इसकी 1/10 ग्रेन मात्रा से कुत्ता 3 मिनट में मर जाता है। खालिस निकोटिन की एक बूंद से काला नाग फौरन, खरगोश तीन मिनट में, बिल्ली और मनुष्य पांच मिनट में मर जाते हैं।

रूस के महात्मा **काउण्ट टालस्टाय** लिखते हैं 'चुरेट तम्बाकू पीने से बुद्धि या विवेकशक्ति नष्ट हो जाती है और इससे पाप में प्रवृत्ति होती है। यह एक ऐसा नशा है जो कई अंशों में शराब से भी खराब है।'

डा. कैलाग व अमेरिकन डाक्टरों का यही कथन है कि 'तम्बाकू का जहर ब्रह्मचर्य को नष्ट कर आयु, बल, शक्ति और तेज सबको हर लेता है।'

डा. जेक्सन कहते हैं 'तम्बाकू, चाय आदि मादक पदार्थों के सेवन से भड़की कामवासनाएं बालकों को कुटबों में फंसा देती हैं।'

एक अंग्रेज **एच.एस. गैग्बरज** लिखते हैं 'बुरी आदतों में सबसे पहली आदत और सबसे बुरी आदत धूम्रपान है जो अनेक बुराइयों की जड़ है। भारत में लगभग 1 लाख लोग प्रतिवर्ष तम्बाकू की चपेट में आकर दम तोड़ देते हैं। अत: ध्यान दीजिए-

कुछ करने योग्य कार्य

1. कहने-सुनने का बड़ा प्रभाव पड़ता है उदाहरण के लिए श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को युद्धभूमि से मुख मोड़ने से रोकना, मन्थरा द्वारा कैकेयी का मन बदलना और कवि चन्द्रबरदायी द्वारा पृथ्वीराज चौहान से धनुष उठवाना आदि-आदि सब कहने सुनने का ही प्रभाव था। अत: कोई भी धूम्रपान आदि व्यसन करता है तो आप चुप न बैठिए उसको प्रेम से समझाइए।
2. अविवाहित युवतियां धूम्रपान करने वाले युवकों से शादी न करें।
3. अतिथियों का सत्कार इस जहररूपी तम्बाकू से न करें।
4. धूम्रपान करनेवालों को वोट न दें।
5. माता-पिता और गुरु का धूम्रपान बच्चे छुड़वाएं।
6. सभी संकल्प करें कि मैं वर्ष में कम से कम एक व्यक्ति का धूम्रपान अवश्य छुड़वाऊंगा।
7. सरकार को भी धूम्रपान-निषेध अभियान चलाकर कानून बनाकर कठोर दण्ड की व्यवस्था करनी चाहिए।
8. धूम्रपान विरोधी विज्ञापन व साहित्य ज्यादा से ज्यादा छपवाकर बांटें।
9. प्रारम्भ में धूम्रपान छोड़ने के लिए मुख में छोटी हरड़ रखकर चूसते रहें।
10. सौंफ और अजवायन दोनों वजन में लेकर बराबर।

अच्छी तरह साफ करके, नीम्बू रस में कर लो तर।।
बारीक पीसकर इच्छानुसार, काला नमक फिर उसमें डालो।
एक रात के बाद में उसको, धीमी आंच में तवे पर सुखालो।।
जब इच्छा हो तब कुछ दानें, मुंह में डालो खूब चबाओ।
धूम्रपान से बच जाओगे, प्रेमी अपना स्वास्थ्य बनाओ।।

अब सर्वोच्च न्यायालय ने भी सार्वजनिक स्थानों, कार्यालयों, विद्यालयों, यात्री-वाहनों व धार्मिक स्थानों में धूम्रपान पर प्रतिबन्ध लगाकर यह सिद्ध कर दिया है कि धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक खतरनाक है। इसलिए समाज में चेतना जागृत करने की अत्यन्त जरूरत है जिससे समाज इस लत से स्वत: छुटकारा पा सके।

आर्यसमाज की आवाज-व्यसन मुक्त रहे समाज।

21वीं शताब्दी हमको प्यारी,
जिन्दगी बीते सुखमय सारी।
हम सबकी यह जिम्मेदारी,
व्यसनमुक्त हो जनता म्हारी।।

जीवन-संदेश

- डॉ. महेश विद्यालंकार

सृष्टि का उत्पादक, पालक, रक्षक, संहारक और कर्मफल प्रदाता परमेश्वर को माना गया है। संसार में जीव उसी की व्यवस्था से आता, रहता, जाता है। उस सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान, अनन्त, अदृश्य सत्ता के समक्ष सभी रुकते, झुकते, डरते एवं उसे मानने के लिए मजबूर होते हैं। ज्ञानी, मानी, बलवान् सभी को देर-सबेर परमात्मा की न्याय व्यवस्था, भोगचक्र, कर्मफल, शासन आदि के सामने लाचार होकर नतमस्तक होना पड़ता है। सच तो यह है कि परमेश्वर अपने अस्तित्व, सत्ता, व्यवस्था और नियमों को हमसे रगड़-रगड़कर मनवा लेता है। हम दुनिया की कोर्ट-कचहरी से बच भी जाएं मगर आत्मा व परमात्मा की कचहरी से कोई नहीं बच सकता है। डरो! उसकी मार में आवाज नहीं होती है। दिन-रात असंख्य योनियों में पड़े रोग-शोक, दुःख-पीड़ा, अभाव, कष्ट के रूप में कर्मफल भोग रहे जीवों को देख कर हमको समझ और संभल जाना चाहिए। जगत में कोई सुपर सत्ता है, जिसके अनुशासन व कन्ट्रोल में हमारी जीवन यात्रा चल रही है।

जीवन एक सफर है। यहाँ कोई अमर होकर नहीं आया है। यह यात्रा कहाँ से शुरू तथा कहाँ खत्म होगी, किसी को पता नहीं है। जीव संसार में अकेला और कर्मानुसार आता है व जाना भी अकेला ही पड़ता है। विचित्र रहस्य है—जीव को स्वयं नहीं मालूम है, मैं पूर्व कहाँ से आया हूँ और मेरा अगला ठिकाना कहाँ होगा। मेरे आने का प्रयोजन व लक्ष्य क्या है? आम आदमी बेहोशी, नशे व पागलपन में जिन्दगी निकाल जाता है। जब जीवन खत्म हो जाता है, तब उसे जीने का ढंग समझ एवम् सलीका आता है। फिर वह पछताता, रोता-पीटता और बेचैन होता है। फिर पछताये होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत। ठहरो! सोचो! कुछ करो! यह जीवन बड़ी तेजी से निकला जा रहा है। खुली आँख की दुनिया है, आँख बन्द होने के बाद यहाँ कुछ नहीं बचता है।

अनेक जन्मों के पुण्य कर्मों के बाद जीव को मानवयोनि पाने का सौभाग्य मिलता है। यह नरतन प्रभु की अनमोल देन और वरदान है। तुलसीदास ने कहा है— **बड़े भाग मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सद् ग्रन्थहि गावा।**

सृष्टि का सर्वोत्तम प्राणी मानव ही है। परमात्मा के बाद मनुष्य सृष्टि का नियामक, व्यवस्थापक एवं संचालक है। वेद कहता है—मनुर्भव-मनुष्य जब सच्चे अर्थ में आदमी बनेगा तभी सच्चे अर्थ में संसार में प्रेम, एकता, भाईचारा व इन्सानियत आयेगी। वेद में कहा है—**''उद्यानं ते पुरुष नावयानम्''** ओ मानव! तुझे ऊपर उठना और देवत्व को पाना है। इन्सानियत से नीचे गिरा तो शैतान बन जायेगा। यह मानव जीवन की लाटरी अनेक जन्मों के बाद निकलती है। इस जीवन यात्रा की पूर्णता धर्म, अर्थ, काम मोक्ष मानी गई है। इस लोक में भी सुन्दरता, सफलता और पूर्णता से जीना और रहना है। इसी जीवन में धर्मार्थ, परमार्थ तथा अगले जीवन के लिए भी सोचना है। इसी जीवन में अगले की अग्रिम बुकिंग है। अधिकांश लोगों की सोच समझ व भागदौड़-कमाओ, खाओ-पीओ और मौज करो, बाद में मर जाओ'' तक सीमित हो रही है। सन्तों एवं शास्त्रों ने सच ही कहा है—

रात गंवाई सोयकर, दिवस गँवायो खाय।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय॥

यह दुर्लभ कीमती जीवन बातों-बातों में तेजी से निकला जा रहा है। मृत्यु हम सबका लगातार तेजी से पीछा कर रही है। हम आँख बन्द किए बेखबर जी रहे हैं। बदलती हुई दुनिया, जिन्दगी, उम्र, रिश्ते, शरीर, मृत्यु आदि से हम कुछ सीख नहीं पा रहे हैं। असली परमात्मा से हम दूर होते जा रहे हैं। नकली देवी-देवताओं, गुरुओं, महन्तों आदि को ही परमेश्वर मानने लगे हैं। जितना हम सच्चे प्रभु से दूर होते जायेंगे, उतने दुःखी, अशान्त, असन्तुष्ट, बेचैन व परेशान रहेंगे। प्रभु को स्मरण करना और धन्यवाद करना, हम सबका परम कर्त्तव्य है। जब हम संसार में आए थे तब हमारे पास क्या था? आज क्या नहीं है? उसने हमें सब कुछ दिया, इससे बढ़कर कृतघ्नता, पाप व अपराध और कोई नहीं होगा। ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती जाये, त्यों-त्यों मनुष्य को शान्ति, सन्तोष, प्रसन्नता और भगवद् भक्ति की ओर बढ़ते जाना चाहिए। हमारी अन्तिम लाईफलाईन सत्संग, मन्दिर व ईश्वर भक्ति ही मानी गई है। पूजा, प्रार्थना, भक्ति, सत्संग, यज्ञ, कथा आदि ये मनुष्य को ही करने तथा इनमें सम्मिलित होने का वरदान है।

पशु-पक्षी, कीट आदि ये कार्य नहीं कर सकते हैं। मनुष्य जीवन की सफलता, सुन्दरता, सार्थकता व महत्व इसी में है–"जीवन हमारा धार्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक, आदर्श पूर्ण तथा प्रेरक बने। हम अपना जीवन भी सुन्दर सफलता व उद्देश्यपूर्ण जीयें और दूसरों के लिए भी सहयोगी व उपयोगी बनें–

न हर भूलो और न जग भूलो, भागो नहीं जागो।

जीवनयात्रा में सर्वत्र फूल बिखेरो, काँटे न बोवो, न फैलाओ। दुनिया में सबसे बड़ा सुख माना गया है, दूसरों के काम आओ, दूसरों के लिए जिओ। जीवन को प्रेम-प्रीति से मिलजुलकर व एक दूसरे के सहयोगी बनकर गुजारो। अन्त में–

प्रभु को न बिसारिए, हिम्मत न हारिए, हँसते मुस्कराते हुए, जिन्दगी गुजारिए।

भरोसा कर तू प्रभु पर, तुझे धोखा नहीं होगा,
ये जीवन बीत जायेगा, तुझे रोना नहीं होगा।

बी.जे.-29, पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है और दिव्य फार्मेशी पतंजलि उत्पादन वस्तुए भी प्राप्त हैं।

प्राप्ति स्थान : विक्रय केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा)
पिन-124507, चलभाष : 09416054195

हंसो और हंसाओ

- रवि शास्त्री आत्मशुद्धि आश्रम

1. टीचर-अच्छा बच्चो बताओ फल कौन कौन से होते हैं?
   विद्यार्थी - आम, केला, सेब...।
   टीचर - और बताओ?
   विद्यार्थी - बस और सब बढ़िया...। ऊपर वाले की कृपा है - आप बताओ क्या हाल है?
2. पिता - तेरे रिजल्ट का क्या हुआ?
   पप्पू - सर ने कहा है इसी क्लास में एक साल और रहना होगा।
   पिता - साल तो चाहे 2-3 लगा लो पर फेल मत होना बेटा।
3. एक लड़की की सासू मां मर गई। कपड़े की दुकान पर कफन लेने गई। बोली-भैया कफन दिखाओ?
   दुकानदार ने कफन दिखाया।
   लड़की - भैया और कलर का दिखाओ न। ... पिंक कलर नहीं है क्या?
4. संता और बंता आठवीं में आठवीं बार फेल हो गये।
   संता - चल खुदखुशी कर लेते हैं।
   बंता - साले पागल हो गया है? अगले जन्म में फिर नर्सरी से शुरू करना पड़ेगा।
5. लड़का - मां आज मेरा दोस्त घर आ रहा है। घर के सब खिलौने छिपा दे।
   मां - तेरा दोस्त चोर है क्या...?
   लड़का - नहीं, वो अपने खिलौने पहचान लेगा।

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

अमेरिका से पत्र प्राप्त

समादरणीय श्रीयुत स्वामी जी,

सादर नमस्ते।

ईश्वरकृपयात्र कुशलं तत्रापि भवतु।

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के 26वें वार्षिक सम्मेलन में भाग लेने 11 जुलाई को न्यूयार्क पहुंचा। इस बार मेरे ऑरलैण्डो के साथ-साथ कैलीफोर्निया, अटलान्टा, न्यू जर्सी, सैन फ्रान्सिस्को आदि अनेक नगरों में योग-शिविर, अध्यापन, प्रवचन, ध्यान, यज्ञ, शंका समाधान के कार्यक्रम बने हैं। 1 मास यहां प्रचार करने के बाद टोरन्टो-कनाडा भी एक सप्ताह के लिए व्याख्यान देने हेतु जाऊंगा। यह मेरी 24वीं विदेश प्रचार यात्रा है।

इस बार सम्मेलन का विषय था "Rejuvenating Arya-Samaj Values in Younger Generation" अर्थात् नई पीढ़ी में आर्य समाज की विचारधारा को कैसे पहुंचाया जाये? आर्य समाजों में नई पीढ़ी का न आना या कम आना, एक चिन्ता का विषय बन गया है। ऋषि दयानन्द जी द्वारा संस्थापित समाज का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है, सर्वत्र निराशा-आशंका की मानसिकता बनती जा रही है। सम्मेलन में अनेक प्रबुद्ध विद्वानों ने इस समस्या के कारण तथा निवारण के उपायों पर अपने विचार अभिव्यक्त किये।

नई पीढ़ी का आर्य समाज में न आने का मुख्य कारण माता-पिता ही हैं। वैदिक शिक्षा प्रणाली में बच्चों को अध्ययन काल में घर में रखने का विधान ही नहीं है। यदि किन्हीं कारणों से माता-पिता बच्चों को गुरुकुल में नहीं भेजते हैं, घर में ही रखते हैं तो उनका कर्त्तव्य बन जाता है कि वे घर को गुरुकुल का रूप दें, गुरु के दायित्वों को भी निभावें। बच्चों को प्रातः जागरण, भ्रमण, व्यायाम, स्नान, ध्यान, प्राणायाम, जप, स्वाध्याय, यज्ञ आदि नैत्यिक कर्मों को श्रद्धा व निष्ठापूर्वक करने हेतु प्रेरणा-प्रोत्साहन प्रदान करें और न करने पर ताड़ना भर्त्सना, दण्ड भी दें। पुरुषार्थ, तपस्या, त्याग, सेवा, विनम्रता, संयम, शिष्टाचार, समाज, राष्ट्र, ईश्वर, भक्ति के आदर्श उत्तम संस्कार बाल्यावस्था में ही बनाये जा सकते हैं, बाद में बड़े होने पर नहीं। माता पिता राग-मोह-भय आदि कारणों से बच्चों को धार्मिक आध्यात्मिक बनाने के अपने कर्त्तव्य से विमुख हो रहे हैं। नई पीढ़ी के नास्तिक, स्वच्छन्द, अशिष्ट, असभ्य बनने में, वे ही सर्वाधिक दोषी हैं और ईश्वरीय न्याय व्यवस्था से अवश्य ही दण्ड के भागी होंगे। इसमें अविश्वास नहीं बनायें।

नई पीढ़ी के वैदिक जीवन पद्धति के प्रति अरुचि, अश्रद्धा, उपेक्षा का एक कारण आर्य समाज के विद्वान्, पण्डित, पुरोहित, कार्यकर्त्ता, अधिकारी, प्रबन्धक, प्रवचन के विषय, प्रतिपादन, व्याख्यान शैली, उनका व्यवहार, समाज के भवन, आकार, रूप-रंग, साधन-सुविधा, साफ-सफाई, भोजन-आवास-बिस्तर से सम्बन्धित है। मात्र यज्ञ, सन्ध्या, घिसे-पिटे भजन-प्रवचनों से, नई पीढ़ी को कुछ नया भी चाहिए। बच्चों, किशोरों, युवकों को आकर्षित तथा प्रभावित करने के लिए समाजों में खेल कूद, संगीत, चित्रकला, कविता, भाषण, सुलेख, आसन, मन्त्रोच्चारण, समान्य ज्ञान से सम्बन्धित विषयों पर प्रतियोगिताओं का भी आयोजन करना चाहिए। इन विषयों की कक्षाएं भी लगानी चाहिए, जिससे युवक आकर्षित होकर आयेंगे तब उनको खेलों के साथ-साथ धर्म व अध्यात्म से सम्बन्धित विषयों का ज्ञान कराया जा सकता है। मात्र यज्ञ संध्या से नहीं आयेंगे।

आज भी देश में हजारों-लाखों सुसंस्कारी आत्माएं जन्म लेती हैं और उनकी व उनके माता-पिता की इच्छा होती है कि वे गुरुकुलों में जाकर वैदिक वाङ्मय के विद्वान् बनें, किन्तु गुरुकुलों की अभाव-ग्रस्त विपन्न दयनीय दुरावस्था को देखकर कोई भी वहां जाना-भिजवाना पसंद नहीं करता है। तपस्या के नाम से निम्न-न्यून-निकृष्ट स्तर के भोजन, वस्त्र, बिस्तर, आवास, साधन-सुविधाओं को प्रदान करना अन्याय-अत्याचार-शोषण की श्रेणी में ही आता है। परिणाम स्वरूप विद्यार्थी कृश-कुरूप-विकृत-निर्बल तथा रुग्ण होते हैं। इन सब में सुधार होना चाहिए तभी पढ़े लिखे आर्य सज्जन अपनी सन्तानों को गुरुकुल में प्रसन्नता पूर्वक विद्वान् बनाने हेतु, अवश्य ही भेजेंगे।

युवा पढ़ने-सुनने की अपेक्षा प्रत्यक्ष व्यवहार को देखकर अधिक प्रभावित होते हैं। न केवल माता-पिता को बल्कि विद्वानों, पण्डितों, प्रवक्ताओं, संन्यासी महानुभावों को चाहिए कि व्यवहार तथा प्रवचन काल में शिष्टता, भद्रता, शालीनता, बनानी चाहिए और लोभ ईर्ष्या-द्वेष, निन्दा-चुगली, आलस्य-प्रमाद, चंचलता, हंसी-मजाक तथा "अधिक अपेक्षाओं का रखना" आदि दोषों से बचना चाहिए। बड़े धार्मिक व्यक्तियों में ऐसे दोषों को देखकर धर्म तथा आध्यात्मिकता से बच्चे विमुख हो जाते हैं। उनके तथा उनके प्रवचनों के प्रति श्रद्धा, रुचि नहीं रहती है।

आर्य सज्जनों को चाहिए कि जैसे बच्चों को गणित, अंग्रेजी, विज्ञान आदि विषयों को पढ़ाने के लिए ट्यूशन रखते हैं वैसे ही धर्म, संस्कृति, सभ्यता, आध्यात्मिकता से सम्बन्धित विषयों का परिज्ञान कराने के लिए योग्य विद्वानों को घर पर बुलाना चाहिए, जिससे वे वैदिक धर्मी बनें। वर्ष में एक या दो बार सार्वजनिक स्थलों पर युवाओं के 3-5-6 दिनों के शिविर लगाने चाहिए, जिसमें वैदिक धर्म, दर्शन शिष्टाचार से सम्बन्धित विशेषज्ञों को बुलाकर युवकों को प्रशिक्षित किया जा सके। युवकों को वैदिक सिद्धान्तों को सरल रूप में स्पष्ट करने वाले पत्रकों, छोटी-छोटी पुस्तकों को पढ़ाकर परीक्षा लेनी चाहिए, जिससे युवा वैदिक धर्म की मूल भूत बातों से अवगत हो जायें।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह न केवल माता पिता को बल्कि धार्मिक विद्वानों, पण्डितों, पुरोहितों, प्रवक्ताओं, समाज के, गुरुकुलों के आचार्यों मे ऐसी प्रेरणा, उत्साह, पराक्रम बुद्धि का संचार करें कि सभी अपने कर्त्तव्यों का, पूर्ण पुरुषार्थ, तपस्या, त्याग, निष्ठा से पालन करें और नई पीढ़ी को वैदिक धर्मी बनाकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में आयी शिथिलता को दूर करें। इसी भावना तथा कामना के साथ।

सबका शुभेच्छुः

ज्ञानेश्वरार्यः ऑरलैण्डो-फ्लोरिडा यू.एस.ए.

17-7-2016

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	**35.00**	रु. प्रति किलो
उत्तम	**45.00**	रु. प्रति किलो
विशेष	**55.00**	रु. प्रति किलो
डीलक्स	**75.00**	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	**130.00**	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	**300.00**	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

प्रेरणादायी जीवन परिचय

एक पेन्टर जो उद्योगपति से साधु बन गया : श्री जयदेव हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थ

प्रस्तुतकर्ता : कन्हैयालाल आय

एक ऐसा व्यक्तित्व जो रेल विभाग में पेन्टर था और जो अपने परिश्रम से एक बहुत बड़ा उद्योगपति बन गया तथा भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय सम्मान 'उद्योग बन्धु' नाम से सम्मानित किया गया। आज मैं उस महान् यज्ञप्रेमी, विद्वान् एवं लेखक श्री जयदेव 'हसीजा' 'प्रेमी', वानप्रस्थ का आप को संक्षिप्त परिचय दे रहा हूँ। जिसे पढ़कर सम्भवत: आप के जीवन में भी कोई परिवर्तन आ जाये।

श्री हसीजा जी का जन्म पश्चिमी पाकिस्तान में ग्राम जतोई जिला मुज़फ्फरगढ़ के एक जमींदार परिवार में हुआ। आप की प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम जतोई में हुई। आप ने मैट्रिक की परीक्षा डी.ए.वी. हाई स्कूल मुलतान से उत्तीर्ण की। आप का विवाह 16 वर्ष की आयु में कुमारी पुष्पा देवी के साथ हुआ। सुखपूर्वक वैवाहिक जीवन व्यतीत किया। आपकी छ: सन्तानें उत्पन्न हुई। पहली सन्तान रणवीर मात्र 40 दिन में, द्वितीय सन्तान गजेन्द्र ढाई वर्ष की आयु में काल कवलित हो गये। शेष 4 सन्तानें वरिष्ठ पुत्र श्री रविन्द्रनाथ का विवाह कुमारी पूनम के साथ, वरिष्ठ पुत्री शशि का विवाह श्री हरीश चान्दना के साथ कनिष्ठ पुत्र श्री धर्मवीर का विवाह कुमारी नेहा के साथ, कनिष्ठ पुत्री कमलेश का विवाह श्री सुरेन्द्र विग के साथ हुआ।

कार्यक्षेत्र में प्रवेश : देश स्वतन्त्र होने के पश्चात् आप जिला सोनीपत के गन्नौर ग्राम में आ गये क्योंकि इनके पिता जी को वहीं पर कृषि भूमि अलाट हो गई थी। आप उस समय मैट्रिक पास थे। नीलोखेड़ी में मैकेनिक बनना चाहते थे परन्तु आप का लेख बहुत सुन्दर होने के कारण आपने पेन्टर की ट्रेनिंग ले ली। यहाँ से आपका कार्यक्षेत्र प्रारम्भ हुआ। आप ने गाजियाबाद में पेन्टर की दुकान खोली परन्तु परिवार पिताजी के साथ गन्नौर रहता था और गाजियाबाद में काम में सफलता न मिली। अन्तत: आप की नियुक्ति रेलवे में पेन्टर के रूप में हो गई। थोड़ा और परिश्रम किया और कालका लोको शैड में बतौर क्लर्क नियुक्त हो गये। आप ने पत्राचार द्वारा इंजीनियरिंग कालेज मद्रास से ओवरसियर का तथा पूसा इन्स्टीट्यूट देहली से ड्राफ्ट्समैन का कोर्स किया, परीक्षा में बैठे और आप वर्क्स सुपरवाईजर चुन लिये गये। तत्पश्चात् आप उन्नति करते करते इन्सपैक्टर आफ वर्क्स बन गये।

उद्योगक्षेत्र में प्रवेश : परन्तु विधाता इन्हें कहीं और ले जाना चाहता था। आप के पंख उन्नति करने के लिए फड़फड़ा रहे थे। रेलवे से 2 वर्ष की छुट्टी ले ली। आप ने गाजियाबाद में वर्म और कोन बनाने लगे परन्तु सफलता न मिलने के कारण आप पुन: रेलवे की नौकरी में आ गये। एक नौकरी पेशा के लिए यह एक बहुत बड़ी चोट थी, परन्तु आप का मन टूटा नहीं।

समय ने करवट बदली : 1970-71 में रेलवे में हड़ताल हुई। इन दिनों आप देहली डिवीजन के डी.एस.ई. के टैक्नीकल असिस्टैन्ट लगे हुए थे। जिन लोगों ने हड़ताल नहीं की थी तब भारत सरकार ने अपने कर्मचारियों के पुत्रों को नौकरी देने का निर्णय लिया। डी.एस.ई. जी ने श्री हसीजा जी से कहा–हसीजा जी! आप भी अपने पुत्र रविन्द्र नाथ को भर्ती करा लो। तभी श्री हसीजा जी ने उस अधिकार से कहा, ''सर! मैंने नौकरी कर ली परन्तु मैं चाहता हूं कि मेरे पुत्र नौकरी करने वाले नहीं, नौकरी देने वाले बनें, आप ऐसी कुछ व्यवस्था करा दें, आप की बड़ी कृपा होगी।'' इस बात को उस अधिकारी ने अपनी स्मृति में डाल दिया और आप को रेलवे में काम करने वाले कुछ पुर्जे बनाने का आदेश दिया। आप ने पहिले जोशी रोड करोल बाग में कार्य प्रारम्भ किया, बाग कड़े

खां में ट्रालियां बनाने का काम किया। रेलवे के लिए चिल्ड्रन पार्क बनाये। घेवरा में फैक्ट्री लगाई। सरकार ने वहाँ से हटा दिया फिर रामा रोड मोती नगर फैक्ट्री लगाकर पंजाबी बाग में रहने लगे। आप की हिमाचल प्रदेश में कालाम्ब में सी.बी.एम. इन्डस्ट्रीज लि. के नाम से एक फैक्ट्री है जो पेट्रोल पम्प के स्ट्रक्चर तथा रिफ्लैक्टिव साईन बोर्ड बनाती है जिसे यू.एस. की मैसर्स 3 एम लि. से स्वीकृत है। आप ने इस समय कुछ कारखाने गुरुग्राम में भी बना रखे हैं जिन्हें इन्होंने अमेरिकन कम्पनियों को किराये पर दे रखे हैं। अभी कुछ समय पूर्व आप के पुत्रों ने सैक्टर 33 के इन्फोसिटी द्वितीय में फूड बुलवर्ड के नाम से एक रेस्टोरेन्ट भी चला रहे हैं जिन्हें इनके पौत्र श्री ईशान हसीजा जी तथा श्री दत्त हसीजा जी कुशलता पूर्वक संचालन करते हैं। आप रेलवे में कार्य यात्रा में एक साधारण पेन्टर से उन्नति करते करते रेलवे के ठेकेदार बन गये और रेलवे के स्थायी विक्रेता भी बन गये। विरोधियों और साथियों ने इन्हें असफल करने के कई प्रयास किये परन्तु स्वयं के परिश्रम और प्रभु कृपा से आप सफलता की ऊंचाइयों को छूते चले गये और एक साधारण से पेन्टर से करोड़पति बन गये।

लेखक एवं विद्वान् के रूप में यात्रा : जब आप रेलवे स्टेशनों पर बोर्ड लिखा करते थे तभी से आप के अन्दर लेखक अंगड़ाईयां ले रहा था। लिखना उनका हॉबी बनता जा रहा था। आप उर्दू भाषा के दैनिक समाचार पत्र 'मिलाप' प्रकाशन हेतु कई विषयों पर छोटे-छोटे कालम 15-25 पंक्तियों में अपने विचार उसके प्रधान एडीटर श्री रणवीर जी को भेजा करते थे उन में कुछ लेख तो छप जाते थे। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ रहा था परन्तु कुछ लेख नहीं भी छपते थे तो एक दिन आप 'मिलाप' समाचार पत्र के कार्यालय में पहुंच गये। मुख्य सम्पादक श्री रणवीर जी से मुलाकात हुई। उन्होंने श्री रणवीर जी से कहा-"मैं कई विषयों पर अपने विचार आपके समाचार पत्र में भेजता हूं उनमें से कुछ ही छाप पाते हैं, मेरी लिखने में रुचि है परन्तु मैंने लेखन के लिए न तो कोई कोर्स किया है और न ही कोई मेरा लेखन गुरु है। आप कृपा करके मिलाप के किसी लेखक से मेरी सिफारिश कर दीजिए ताकि वह मुझे अपना शिष्य बना ले ताकि मैं अपनी इस हॉबी को सफल कर सकूं।" श्री रणवीर जी ने इनसे पूछा-'प्रेमी' जी आपका निवास स्थान कहां है?" श्री प्रेमी जी ने उत्तर दिया-"सर! मैं रानी बाग शकूरबस्ती में रहता हूं।" उन्होंने सेवक को आदेश दिया-"देखो! क्या श्री फिक्र तौसवी" जी आये हैं? तो उन्हें कहो कि मैं उन्हें याद कर रहा हूं" थोड़े अन्तराल के पश्चात् श्री "फिक्र तौसवी" जी अन्दर पधारे। तब श्री रणवीर जी ने कहा-"सर! यह प्रेमी जी रानी बाग शकूर बस्ती में रहते हैं आपके निकट इनका घर है आप इनके लेखों को शुद्ध करने का अपना बहुमूल्य समय प्रदान करें, क्योंकि यह आपको अपना गुरु धारण करना चाहते हैं। प्रेमी जी रेलवे में पेन्टर हैं, लिखने में इनकी रुचि है।" श्री फिक् तौसवी जी मान गये और उन्होंने मुझे सायंकाल 3 बजे से 4 बजे तक आने की स्वीकृति प्रदान कर दी। एक वर्ष तक ये अपने लेख इनसे सुधरवाते रहे परन्तु इनकी ट्रान्सफर कालका लोको शेड में हो जाने के कारण लेखन कार्य अवरुद्ध हो गया।

प्रभु प्रेरणा हुई : आप ने रेलवे से स्वेच्छा से नौकरी से त्यागपत्र देकर उद्योग में प्रवेश कर गये और

श्री चन्द्रभान चौधरी (पूर्व डी.सी.पी.) द्वारा एकत्रित दान राशि

गुप्त दान	12000/-
श्रीमती चन्द्रकला जी राजपाल दिल्ली	1000/-
श्रीमती सुभाषनी आर्या जी पं. विहार दिल्ली	500/-
प्रवीण मेंहदीरत्ता	150/-
श्री एचपी. खंडेवाल जी विकासपुरी दिल्ली	100/-
श्रीमती प्रेमलता महाजन, विकासपुरी, दिल्ली	100/-
श्री सौरभ चौधरी, विकासपुरी, दिल्ली	100/-
सेठी परिवार	100/-

आज आप के सुपुत्र एक प्रतिष्ठित उद्योगपति के रूप में स्थापित हुए हैं। आपको प्रारम्भ में उद्योग खड़ा करने में दिन-रात एक करना पड़ा अत: लेखन कार्य के लिए समय नहीं मिल पाता था परन्तु 1977-78 में जब आपके पुत्रों ने विधिवत आपका उद्योगों में हाथ बटाना प्रारम्भ किया तो आपके पास समय बचने लगा। आप ने एक सम्पादक की प्रेरणा से अपने वैचारिक लेखन को सम्पत्ति मानते हुए अन्दर के लेखक को पुन: जगा दिया जिसका परिणाम निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं–

1. यादों की परछाईयाँ, 2. सच्चाईयाँ जीवन की, 3. बीसवीं सदी का चाणंक्य (हिन्दी में), 4. गायत्री वैभव, 5. बीसवीं सदी का चाणक्य (अंग्रेजी में), 6. वैदिक प्रश्नोत्तरी, 7. उड़ाने जीवन की, 8. कहानियाँ जीवन की, 9. सीढियां जीवन की, 10. पागल मन की उड़ाने (कविताएं)

महर्षि दयानन्द मॉडल प्राईमरी स्कूल और हसीजा जी : मार्च 2004 का तीसरा सप्ताह श्री हसीजा जी आर्य समाज वेद मन्दिर मोहन कुण्ड एच ब्लाक साऊथ सिटी-I (झाड़सा) के पुरोहित श्री राजेन्द्र शास्त्री जी के साथ किसी दानी पुरुष को मिलने के पश्चात् पैदल ही वापिस आ रहे थे। मार्ग में एक 500 वर्ग गज के प्लाट पर निर्माण कार्य चल रहा था। रेलवे में निर्माण निरीक्षक होने के कारण इनकी दृष्टि 5, 6 मजदूरों के बच्चों पर गई जो लड़ भी रहे थे और कंचे भी खेल रहे थे। यह बच्चों के पढ़ने की आयु है इस आयु में भी यह विद्यालय नहीं जा रहे। इस घटना से श्री हसीजा जी द्रवीभूत हो गये जैसे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को चूहे के शिव की मूर्ति पर चढ़कर उछलने की घटना ने जीवन का दर्शन दे दिया था। इसी प्रकार इन न पढ़ने वाले बच्चों को देख कर अन्दर से हिल गये। उसी समय श्री राजेन्द्र शास्त्री पुरोहित से कहा कि कुछ ऐसा कार्यक्रम बनाओ कि इन बच्चों को पढ़ाया जा सके। शास्त्री जी ने कहा–''हसीजा जी, यह कर्म इतना सरल नहीं है, ये बच्चे निर्धन हैं। ये पढ़ाई का खर्चा नहीं उठा सकते।'' श्री हसीजा जी ने मन ही मन निर्णय ले लिया और शास्त्री जी से कहा, ''इनके व्यय को मैं वहन करूंगा। उस समय आप अपनी फर्म सी.बी.एम. इन्डस्ट्री लि. के कार्यकारी अध्यक्ष थे। उसी उमसय उन्होंने शास्त्री जी से इन बच्चों को पढ़ाने पर होने वाले व्यय को वहन करने की स्वीकृति देते हुए कहा–''शास्त्री जी, कल भारतीय नव वर्ष प्रारम्भ हो रहा है, अत: कल से ही इन बच्चों को शिक्षा का प्रारम्भ कराते हैं। आप इनके माता पिता को कल प्रात:काल यज्ञ पर बुलाईये, उन्हें अपने बच्चों को पढ़ाने की प्रेरणा दीजिये। बस कुछ दिन आप को इनका अध्यापक बनना पड़ेगा। जब संख्या 20 को पार कर जायेगी। इनके लिए अध्यापक की व्यवस्था कर ली जायेगी।'' प्रभु प्रेरणा से दूसरे ही दिन सम्वत 2061 (सन् 2004) के शुभ दिन महर्षि दयानन्द माडल प्राइमरी स्कूल की स्थापना आर्य समाज वेद मन्दिर साऊथ सिटी में हो गई।

वानप्रस्थ की दीक्षा : नि:शुल्क विद्यालय को विधिवत चलाने के लिए आपने 2005 में वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर महर्षि दयानन्द एजूकेशनल सोसायटी पंजीकृत करवा ली ताकि विद्यालय की पाई पाई का हिसाब रखा जा सके। मार्च 2004 से सितम्बर 2013 तक ये पढ़ने वाले बच्चे गर्मी, सर्दी, वर्षा को सहन करते रहे। श्री हसीजा जी सोचते–प्रभु! यह तेरी क्या व्यवस्था है, ऐसा नहीं हो सकता है कि मेरे इन बच्चों को छत मिल जाये। इस महामानव ने 2005 से लेकर 2011 तक विद्यालय के लिए एक प्लाट हुडा से प्राप्त हो जाये। बहुत बार प्रयास किया। मुझे बार बार प्रेरणा देते रहे–''आर्य जी! मेरा एक स्वप्न पूरा करा दीजिये, यह कहते वे इतना भावुक हो जाते थे कि इनकी आंखों से गंगा-यमुना की धारा अश्रुओं के रूप में बहने लगती थी। मुझे अपनी ही गाड़ी पर न जाने कहां-कहां ले गये यदि उसका वर्णन करने लगूं तो सम्भवत: कई पृष्ठ इस पर लिखने पड़ेंगे। सरकार के किस अधिकारी, राजनीतिज्ञ, सामाजिक नेता के पास आप जा कर गिड़गिड़ाये परन्तु सब झूठे आश्वासन ही मिले। बस एक ही ज्वाला हृदय में धधक रही थी कि वह दिन कब आयेगा कि जब मैं इन नौनिहालों को छत दिलवा पाऊंगा। इसी धुन में स्वयं भी लगे रहे और अपने सभी साथियों श्री परूथी जी, श्रीमती नीलम भाटिया, श्रीमती उमा कपूर को इस कार्य के लिए झोंकते रहे। अन्तत:

एक दिन दैनिक जागरण समाचार ने इनके अन्धेरे कोने में प्रकाश भर दिया जो इस प्रकार है।

20 फरवरी 2012 का दैनिक जागरण का समाचार जो प्रकाश स्तम्भ बन गया : हुडा के प्रशासक डा. प्रवीण कुमार आई.ए.एस. किसी स्थान पर निरीक्षण करने के लिए जा रहे थे। सड़क के एक फुटपाथ पर एक अधेड़ महिला 15-16 बच्चों को पढ़ा रही थी। गाड़ी वहाँ रुकवा कर उस महिला के पास गये। पूछा–'बहिन जी! क्या आप इन बच्चों को प्रतिदिन पढ़ाती हो?' आज वर्षा बनी हुई है, वर्षा आने पर आप और बच्चे भीग जाएंगे तब आप क्या करेंगी?' उस महिला ने उत्तर दिया–''ये अपने घर भाग जायेंगे और मैं भी घर चली जाऊंगी''। डा. प्रवीण कुमार ने फिर पूछा–''इनके लिए पुस्तकें, कापियां, स्टेशनरी की व्यवस्था कौन करता है?'' उस अध्यापिका ने उत्तर दिया–''मैं अपनी पेन्शन से इनकी केवल इतनी ही सहायता करती हूं।'' यह बात सुनकर डा. प्रवीण कुमार जी ने इस महिला को मन ही मन नमन करते हुए कहा–''बहिन जी, यहां कोई निकट सरकारी स्कूल या सरकारी भवन नहीं है?'' उस महिला ने उत्तर दिया–''सर, निकट में ही एक कम्युनिटी सेन्टर है।'' डा. प्रवीण कुमार जी उस महिला को साथ लेकर कम्युनिटी सेन्टर पहुंचे, वहां पता चला कि बी.डी.ओ. साहब इसकी व्यवस्था देखते हैं। एकदम बी.डी.ओ. साहब को फोन करके पूछा–''सर, कितने कमरे लगभग खाली रहते हैं'' बी.डी.ओ. साहब ने कहा–''दो या तीन कमरे'' तब डा. प्रवीण कुमार जी ने बी.डी. ओ. साहब को कहा–''एक कमरा इन बच्चों को पढ़ने के लिए आवंटिक कर दीजिये।'' बी.डी.ओ. साहब ने कहा–''यह मेरा अधिकार नहीं है, डी.सी. साहब ऐसा कर सकते हैं।'' डा. प्रवीण कुमार जी ने उसी समय डी.सी. गुरुग्राम से बात करके एक कमरा इन छात्रों के पढ़ने के लिए आवंटित करा दिया। ज्यूं ही गाड़ी में बैठ कर डा. प्रवीण कुमार जाने लगे तो उस अध्यापिका ने डा. जी का धन्यवाद किया और आशीर्वाद दिया–''सर! इन निर्धन बच्चों की दुआएं आपकी आयु वृद्धि एवं उन्नति हेतु वरदान प्रमाणित होंगी।'' यह समाचार श्री हसीजा जी ने पढ़ा। बस यह समाचार एक प्रकाश स्तम्भ के समान निर्देश दे गया।

श्री हसीजा जी की नींद उड़ी : इस समाचार ने श्री हसीजा जी के मन में खलबली मचा दी। प्रातः साढ़े पांच ही बजे थे कि मेरे मोबाईल की घण्टी बज उठी। मैं विचलित हो गया, इतनी प्रातःकाल किसका फोन आ सकता है, देखा, दूसरी ओर श्री हसीजा जी बात करना चाहते हैं। घबराते हुए फोन खोला, तो हसीजा जी बोले–''मेरे प्रिय अनुज श्री कन्हैयालाल आर्य जी, प्रकाश की एक किरण मिल गई है, उन किरणों को समेटना और उन्हें प्रकाश पुंज बनाकर क्रियान्वित करना आपका काम है।'' मैं उन का आशय न समझ सका। उन्होंने मुझे कल के समाचार की पूरी जानकारी दी तो मैंने कहा–''भ्राता जी, यह अधिकारी सब पर मेहरबान हो जायें, यह भी आवश्यक नहीं कि यह साहब हमारी भी समस्या का समाधान कर देंगे।'' परन्तु मैं इनके इस उत्साह को ठंडा नहीं होने देना चाहता था। अतः हम दोनों ने डा. प्रवीण कुमार जी से मिलने का मन बना लिया। मैंने श्री हसीजा जी को सुझाव दिया–मैं तो आप के साथ चलूंगा ही, यदि डा. धर्मपाल मैनी जी को साथ ले लिया जाये तो हमारा कार्य अवश्य हो जायेगा'' मैंने और श्री हसीजा जी ने डा. धर्मपाल मैनी जी से बात की। अन्ततः हम तीनों डा. प्रवीण कुमार जी के कार्यालय पहुंच गये। वहां पहले ही 40-50 व्यक्ति अपनी अपनी समस्याओं के समाधान के लिए बैठे थे। डा. धर्मपाल मैनी जी ने अपने परिचय की पर्ची ज्यूं ही डा. प्रवीण कुमार जी के पास पहुंची, उन्होंने हमें फौरन बुला लिया। हमारे अन्दर प्रवेश करते ही डा. प्रवीण कुमार जी अपनी कुर्सी से खड़े हुए और डा. धर्मपाल जी मैनी जी को चरण वन्दना की। मैं इस दृश्य को देख कर भाव विभोर हो गया। मैंने अब तक डा. प्रवीण कुमार के कठोर प्रशासन की चर्चाएं सुन रखी थीं। परन्तु उनका यह रूप देख कर मुझे भवभूति के उत्तर राम चरित की वह पंक्तियां स्मरण हो आईं–**''वज्रादपि कठोराणि, मृदूनि कुसुमादपि''** यह शब्द रावण द्वारा सीता के अपहरण के पश्चात् श्री रामचन्द्र जी के विलाप को सुनकर सीता की एक सखी वासन्ती के मुख से उच्चरित हुए थे–''राम तुम हो तो वज्र के समान, परन्तु तुम फूलों

के समान इतने मृदु भी हो सकते हो।" मैं इन भावों को अपने सम्मुख रखते हुए डा. प्रवीण कुमार जी के बारे में सोचता रहा कि इतना कठोर प्रशासक और ऐसी विनम्रता मुझे लगा कि श्री हसीजा जी का स्वप्न अब सार्थक हो जायेगा। डा. प्रवीण कुमार जी सभी लोगों को छोड़ कर हमसे चर्चा करने लगे। डा. धर्मपाल मैनी जी ने मेरा और हसीजा जी का इतना अच्छा परिचय कराया कि उन्होंने हमारी बात को ध्यान से सुना। डा. मैनी जी ने कहा–श्री हसीजा जी के इस स्वप्न को पूरा करा दीजिये। यह अपने इस विद्यालय में पढ़ने वाले निर्धन छात्रों को छत दिलाना चाहते हैं। इनके विद्यालय में 200 बच्चे गर्मी, सर्दी, वर्षा, आन्धी, तूफान को सहन कर रहे हैं, इनके लिए छत की व्यवस्था करा दें।" डा. मैनी जी ने इतनी भावुकता से बात कही कि डा. प्रवीण कुमार जी ने न केवल हमारी बात को गम्भीरता से सुना, बल्कि उसी समय अपने निजी सचिव को हमारे सामने कुछ आदेश भी दे दिये। अब हमें पूर्ण विश्वास हो गया था कि अब हमारा काम हो जायेगा। हम डा. प्रवीण कुमार जी का धन्यवाद करके बाहर आ गये।

कुछ ही दिनों हमारी समस्या का समाधान हो गया जैसे श्रीकृष्ण जी के पास सुदामा अपनी निर्धनता की बात लेकर गया था और वापिस आया तो झोपड़ी के स्थान पर महल और परिवार की आर्थिक स्थिति एकदम ठीक हो गई इसी प्रकार डा. प्रवीण कुमार जी भी हमारे लिए श्री कृष्ण जी के समान हमारे सहायक बन गये। हमारा न केवल भवन बन गया। बच्चों को न केवल छत मिली बल्कि पंखे, कूलर, ट्यूब लाईट, प्रत्येक बच्चे के बैठने के लिए स्टूल, मेज की भी व्यवस्था हो गई है। इसका सम्पूर्ण श्रेय डा. धर्मपाल जी मैनी को है। यदि अभिलाषा ग्रुप की दो बहिनें श्रीमती नीलम भाटिया, श्रीमती उमा कपूर जी तथा श्री खजान सिंह जी का सहयोग न मिलता, तो यह एक स्वप्न ही रह जाता। इस कार्य के लिए आर्य समाज के प्रधान श्री महावीर सैनी एवं मन्त्री श्री कर्मवीर जी भी इस कार्य के लिए धन्यवाद के पात्र हैं।

आप वैदिक विचारों से ओत प्रोत हैं। महर्षि दयानन्द और आर्य समाज आप के अंग अंग में व्याप्त हैं। कोई ऐसा दिन नहीं होता जब आप आर्य समाज वेद मन्दिर झाड़सा में जाकर यज्ञ न करते हों। गर्मी, सर्दी, वर्षा आदि कठिनाइयां आप के मार्ग को अवरुद्ध नहीं कर सकता। कोई ऐसी संस्था नहीं, जिनकी आप आर्थिक सहायता न करते हैं। आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं फर्रुखनगर पर आप की विशेष कृपा रहती है। महर्षि दयानन्द माडल प्राईमरी स्कूल वेद मन्दिर झाड़सा में तो आपके प्राण बसे हैं। इस विद्यालय के लिए अपने सभी मित्रों, सम्बन्धियों एवं परिवार जनों से पूर्ण सहयोग इस विद्यालय के लिए करवाते रहते हैं तथा स्वयं भी एक सम्मानजनक राशि नियमित रूप से प्रदान करते रहते हैं। इसके अतिरिक्त गुरुग्राम की सभी आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं, आर्ष गुरुकुलों, गौशालाओं, कहीं आपदा आये इन सभी संस्थाओं को आप यथायोग्य सहयोग करते रहते हैं। आज आप 86वें वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं। आप एक सुखी परिवार में रह रहे हैं। परन्तु दुर्भाग्य वश 10.12.2009 को इनकी जीवन साथी श्रीमती पुष्पा देवी हसीजा जी अपनी यात्रा को पूर्ण कर स्वर्ग सिधार गई। यह श्री हसीजा जी के लिए एक बहुत बड़ा झटका था, परन्तु जो व्यक्ति निष्काम समाज सेवा में व्यस्त रहता हो तो उन्हें ऐसे अवरोध कहां रोक पाते हैं। आप काफी समय तक वनवासी कल्याण आश्रम गुरुग्राम के प्रधान रहे हैं, इस समय संरक्षक हैं। महर्षि दयानन्द एजूकेशनल सोसायटी के आप संस्थापक सदस्य हैं और 11 वर्ष तक आप इसके उपप्रधान पद को सुशोभित करते रहे हैं। आपके कई लेख आत्मशुद्धि पथ एवं पंजाबी संस्कृति में प्रकाशित होते रहते हैं। आप इस समय आर्य समाज वेद मन्दिर साउथ सिटी झाड़सा के वरिष्ठ सदस्य हैं।

आप का बहुमुखी व्यक्तित्व इतना विशाल है कि आप के जीवन चरित्र को कुछ पंक्तियों में बांधना मेरे जैसे अल्पज्ञ लेखक के वश की बात नहीं है। मैंने आपके जीवन परिचय की एक झांकी प्रस्तुत की है। मैंने उनके जीवन की कुछ बूंदे उस विशाल समुद्र को समर्पित कर रहा हूं। वे हमारे प्रेरणा स्रोत थे, और रहेंगे। मैं उनके सुखद एवं स्वस्थ जीवन की प्रभु से कामना करते हैं। **सम्पर्क सूत्र : 4/45, शिवाजी नगर, गुरुग्राम, चलभाष : 09911197073**

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

दान सुची

श्री आर.के. चड्डा अंसल कृष्णा मेन होशम रोड, बेंगलोर	12000/-
श्रीमती सुशीला शत्रुघ्न लाल गुप्ता राँची झारखण्ड	11000/-
श्री रवि कुमार सुपुत्र श्री विनेश कुमार बहादुरगढ़	5100/-
आर्य समाज सी-3 ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली-58	5100/-
स्व. श्री अशोक सिसोदिया पुण्य तिथि पर परिवार द्वारा	3402/-
श्री डा. हवा सिंह जी पौत्र पृथ्वी के जन्मदिवस पर, धर्मविहार	2100/-
श्री यशदीप व प्रेरणा दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	1500/-
राजपाल जी सुपुत्र श्री दफेदार सुल्तान सिंह गढ़ी, सांपला रोहतक	1111/-
रवि कुमार जी आर्य अञ्जनी प्रोपर्टीज बहादुरगढ़	1100/-
श्री चन्द्रभान जी जैन आर्यसमाज मन्दिर गली, बहादुरगढ़	1100/-
श्री कर्नल राजेन्द्र जी सहरावत आर्य सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
स्व. वीरेन्द्र जी ढाका दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	1100/-
श्री पार्थ दहिया सैक्टर-9, बहादुरगढ़	1100/-
श्री नरेन्द्र जी सुपुत्र श्री देवशर्मा जी टीकरी कलां दिल्ली	1100/-
श्री सुशीला कुमारी दलाल बहादुरगढ़	1100/-
श्री प्रधान राजबीर जी लोहचब टैम्पो यूनियन MIE बहादुरगढ़	1100/-
श्री अँगिरा मुनि जी सुपुत्र वैध भीम सिंह जी आर्य गोप सोलदा	1100/-
श्रीमती प्रभा देवी काले धर्मपत्नी स्व. चमन लाल दयानन्द नगर	500/-
जय सिंह जी मलिक दलवीर नगर, बहादुरगढ़	1000/-
मेघाली सुपुत्री श्री विजेन्द्र जी शर्मा टीचर कॉलोनी, बहादुरगढ़	1000/-
हेड मास्टर रामभज जी चुघ सन्त कॉलोनी बहादुरगढ़	1000/-
मा. राम दास जी सैनी दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	750/-
शील चन्द्र जी एकोरेट फैक्ट्री कसार, बहादुरगढ़	500/-
श्री जगदीश आर्य जैकमपुरा, गुड़गांव, हरियाणा	501/-
सज्जन हुड्डा देव नगर, बहादुरगढ़	500/-
श्री समे सिंह जी सर्कल नम्बदार सुपुत्र श्री रत्तन सिंह जी टी.कलां	500/-

विविध वस्तुएं

मोक्ष दलाल	1 बोरी गेहूं
गुमान सिंह जी शेखावत	2 किलो बूरा, 10 किलो चावल, 25 किलो आटा, 3 किलो दाल, 3 किलो रिफाईण्ड
दिनेश जी दलाल आर्य नगर, बहादुरगढ़	50 कम्बल
दीपेन्द्र सुपुत्र श्री भूप सिंह डबास शनि मन्दिर, टीकरी दि.	1 टीन तेल सरसो
श्री जितेन्द्र छिलर बामडौली	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री रामफल सिंह जी दलाल राम नगर, बहा.	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री ईश्वर सिंह जी आर्य सैक्टर-6 बहादुरगढ़	12 ब्लब एल.ई.डी.
नैन पाल मन्दिर शुक्ला जी, टीकरी कला	1 टीन सरसों तेल

गौशाला हेतु प्राप्त दान

श्री निर्मल अग्रवाल सुपुत्र श्री एस.के. अग्रवाल एडवोकेट अग्रवाल कॉलोनी बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती रमन अबरोल पश्चिम विहार दिल्ली	500/-
श्री रोहताश जी अहलावत राम नगर, बहादुरगढ़	501/-

फर्रूखनगर आश्रम को अन्न और दान राशि प्राप्त

यादव एण्ड कम्पनी श्री राय सिंह जी अनाज मण्डी फर्रूखनगर	200 किलोग्राम गेहूं
फकीर चन्द मंगला जी फर्रूखनगर	100 किलोग्राम गेहूं
ग्राम फाजिलपुर मन्दिर से	200 किलोग्राम गेहूं
श्रीमती किरण जी फाजिलपुर	50 किलोग्राम बाजरा
पवन जैन जी अनाज मण्डी फर्रूनगर	50 किलोग्राम गेहूं
विरेन्द्र कुमार गुप्ता जी अनाज मण्डी फर्रूखनगर	50 किलोग्राम गेंहू
अतर सिंह जैन दुकान न. 23 अनाज मण्डी	50 किलोग्राम गेहूं
ओम प्रकाश एण्ड सन्स अनाज मण्डी फर्रूखनगर	50 किलोग्राम गेहूं
महावीरार्य सु. श्री दलीप सिंह जी	50 किलोग्राम गेहूं
ओमप्रकाश जी हीरालाल जी फर्रूखनगर	50 किलोग्राम गेहूं
महंत सुभाष गिरी जी तालु भिवानी	50 किलोग्राम गेहूं
युवा क्लब फाजिलपुर ग्राम	50 किलोग्राम गेहूं
महावीर जी सु. श्री रतनलाल जी	50 किलोग्राम गेहूं
मोहित आर्य जोनियावास खेड़ा खुर्रमपुर	50 किलोग्राम गेहूं
अजीत लाम्बा फाजिलपुर	50 किलोग्राम गेहूं
सुरजीत सिंह आर्य उर्फ लालू चन्दू	100 किलोग्राम गेह
नरवीर एण्ड कम्पनी अनाज मण्डी फर्रूखनगर	1100/-
श्री धर्मवीर सु. श्री प्रताप सिंह अनाज मण्डी, फर्रूखनगर	750/-
श्री प्रेम चन्द जी गर्ग अनाज मण्डी फर्रूखनगर	750/-
चौधरी सम्पूर्ण सिंह एण्ड कम्पनी सोन्धी वाले अनाज मण्डी, फर्रू.	501/-
श्री मनोज कुमार, श्री सुरेन्द्र सिंह अनाज मण्डी फर्रूखनगर	500/-
राजन ट्रेडिंग कम्पनी अनाज मण्डी फर्रूखनगर	150/-
श्री कृष्ण कुमार जी कहरा सिंह जी अनाज मण्डी फर्रूखनगर	100/-
पं. राजेश जी चन्द्र	100/-

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 सितम्बर 2016 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

यज्ञ-योग-साधना के लिए बहादुरगढ़ चलो! ॥ ओ३म् ॥ यज्ञ-योग साधना के लिए बहादुरगढ़ चलो

राष्ट्र, धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद-यज्ञ-योग साधना केन्द्र

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का 50वां स्थापना दिवस–वार्षिकोत्सव समारोह पर

अथर्ववेदीय बृहद् यज्ञ एवं निःशुल्क ध्यान योग शिविर

(सोमवार दिनांक 26 सितम्बर से रविवार दिनांक 2 अक्टूबर 2016 तक)

सानिध्य- पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी मुख्याधिष्ठाता आश्रम

योगनिर्देशक एवं यज्ञ ब्रह्मा	:	**आचार्य शिव नारायण जी शास्त्री**, ओजस्वी वक्ता साधक रोहिणी दिल्ली
वेदपाठ	:	श्री ध्रुव शास्त्री, श्री अनुप शास्त्री स्नातक गुरुकुल झज्जर
प्रमुख वक्ता	:	स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी गुरुकुल पूठ उत्तर प्रदेश, श्री चन्द्रशेखर जी शास्त्री वैदिक प्रवक्ता विकासपुरी दिल्ली, स्वामी रामानन्द जी, श्री आचार्य चाँद सिंह, आर्य तपस्वी सुखदेव जी वर्मा (दिल्ली), आचार्य रवि शास्त्री जी आश्रम, आचार्य खुशीराम जी (वेद प्र.आ.प्र.सभा दिल्ली) वा. ईशमुनि जी
भजनोपदेशक	:	वान. हरीश मुनि जी, महात्मा विश्वमुनि जी, श्री सत्यपाल जी मधुर दिल्ली, पं. रमेशचन्द्र जी आर्य झज्जर, संगीताचार्य लक्ष्मण प्रसाद जी, श्री रामानन्द जी एवं आश्रम के ब्रह्मचारी और कन्या गुरुकुल सिद्धीपुर लोवा कलां की छात्राओं का कार्यक्रम प्रभावशाली रहेगा।

कार्यक्रम समय : प्रातः 5 बजे से 6 बजे तक ध्यान, 6 बजे से 7 बजे तक यौगिक क्रियाओं का प्रशिक्षण

प्रातः 8.00 से 11 बजे तक : यज्ञ-भजन-उपदेश, सायं 3 से 6 बजे यज्ञ-भजन-उपदेश, रात्रि 8 से 10 तक भजनोपदेश और व्याख्यान तथा मल्टीमीडिया हॉल में धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन

आर्य महिला जागृति सम्मेलन	:	शुक्रवार 30 सितम्बर सायं 3 बजे से
योग सम्मेलन	:	शनिवार 1 अक्टूबर प्रातः 10 बजे से
चरित्र निर्माण सम्मेलन	:	शनिवार 1 अक्टूबर सायं 3 बजे से

पूज्य आत्मस्वामी जन्मोत्सव एवं आश्रम स्थापना दिवस समारोह

रविवार दिनांक 2 अक्टूबर, 2016 यज्ञ पूर्णाहुति प्रातः 9 बजे तत्पश्चात् स्थापना समारोह

आर्यसमाजों के अधिकारी एवं व्यक्तिगत यजमान बनने के इच्छुक इस शुभ अवसर पर सादर आमंत्रित हैं। भारतीय वेशभूषा में यजमान आसनों को सुशोभित करने के लिए शीघ्र अपना नाम यजमान सूची में लिखवायें। बाहर से आने वाले माताओं/बन्धुओं/साधकों/याज्ञिकों के लिए भोजन एवं निवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से निःशुल्क रहेगी। आप अपने पधारने की सूचना 15 सितम्बर से पूर्व शीघ्र प्रेषित करें, जिससे आपके निवास की व्यवस्था उत्तम की जा सके। ऋतु अनुसार बिस्तर अवश्य साथ लावें। अधिक से अधिक संख्या में इष्टमित्रों सहित पधारकर इस विशाल आयोजन से लाभ उठावें। आश्रम बस स्टाप के समीप दिल्ली रोड़ पर स्थित है।

(निवेदक)

विक्रम देव शास्त्री, व्यवस्थापक आश्रम चलभाषः 9896578062

सत्यानन्द आर्य	कन्हैयालाल आर्य	दर्शनकुमार अग्निहोत्री	सत्यपाल वत्स
प्रधान (ट्रस्ट)	उपप्रधान	मन्त्री	उपमन्त्री

आत्मशुद्धि आश्रम (पंजीकृत न्यास) बहादुरगढ़-124507, जिला झज्जर, हरियाणा

दूरभाष : 01276-230195, चलभाष : 09416054195

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक
सितम्बर 2016
छपी पुस्तक – पत्रिका
एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646
पंजीकरण संख्या पी/रोहतक–035/2015–17

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)–124507

सेवा में –

फर्रूखनगर आश्रम मासिक सत्संग की झलकियां

माननीय कृष्ण राठी डायरेक्टर सी.सी.एम.सी. सै. स्कूल बिरहेड़ा को सम्मानित करते हुए।

मुख्य यजमान आश्रम ट्रस्टी श्री अशोक जी जून सपत्नीक

भक्तजन

महंत निर्माणपुरी जी महाराज गौशाला फर्रूखनगर को सम्मानित करते हुए।

आचार्य चांद सिंह के साथ आर्यवीर

(विवरण पृष्ठ 4 पर)

सामूहिक ऋषि लंगर करते हुए भक्तजन